होशंगाबाद विज्ञान

अपील श्रीराम और अल्लाह मिया से	1
आदाब	4
मस्जिद बनाम मंदिर	11
पिता का ख़त	25
बाबरी मस्जिद- राम जन्मभूमि सवाल	27
कविता- यह धर्म के विरुद्ध है	32
नाटक- सबसे सस्ता गोश्त	33
इतिहास के साथ बदसलूकी	38
डायरी का पृष्ठ	39
कविताएं	42
लघुकथा	44

अंक 31 शिक्षा व शिक्षकों से संबंधित पत्रिका मई 90

जो इस पागलपन में शामिल नहीं होंगे
मारे जायेंगे।

कटघरे में खड़े कर दिये जायेंगे जो विरोध में बोलेंगे
जो सच सच बोलेंगे, मारे जायेंगे।

सबसे बड़ा अपराध है इस समय
निहत्थे और निरपराध होना
जो अपराधी नहीं होंगे
मारे जायेंगे

संपादन :
हृदयकांत
राजेश खिंदरी
राघवेन्द्र तेलंग
सहयोग :
ब्रजेश सिंह
इंदु नायर
अरुण कुमार
कालूराम शर्मा
चित्रांकन :
कमलेश
वितरण :
महेश शर्मा

होशंगाबाद विज्ञान

होशंगाबाद और विज्ञान पढ़ाने तक ही सीमित नहीं है
बल्कि शिक्षा में नये सोच और नवाचार का प्रतीक है।

अपील श्रीराम और अल्लाह मियां से!

राही मासूम रज़ा

दिल्ली युनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर मुनीस रज़ा ने बड़े मज़े की बात कही कि जो मंदिर भगवान के और मस्जिदें अल्लाह की होतीं तो इन पर इतने झगड़े न होते। पर मंदिर बिड़ला का है। मस्जिद बाबर की। बाबर और बिड़ला कद में अल्लाह और भगवान से दो-दो अंगुल ऊंचे निकल गये हैं। परिणाम : झगड़ा।

पिछले दिनों बाबरी मस्जिद सुरक्षा कमेटी ने मुसलमानों से कहा था कि वे गणतंत्र दिवस के समारोहों में हिस्सा न लें। यदि कमेटी यह समझती थी कि गणतंत्र दिवस में हिस्सा न लेना मुसलमानों का कर्त्तव्य है तो सरकारी नौकरों को छुट्टी क्यों दे दी गयी? क्या मुसलमान सरकारी नौकरों का यह फ़र्ज़ नहीं कि वे भी गैर सरकारी मुसलमानों की तरह इसलाम की हिफाज़त के लिए जान या नौकरी की बाज़ी लगा दें? या शहाबुद्दीन एंड कम्पनी को यह डर हो शायद कि नौकरी पेशा मुसलमानों को इसलाम से ज़्यादा नौकरी के खतरे में होने का डर होगा। इसलिए वह बाबरी मस्ज़िद से ज़्यादा अपनी नौकरी को बचाना चाहेंगे और इस इसलाम दुश्मन, मुसलमान दुश्मन और हिंदुस्तान दुश्मन बहिष्कार में हिस्सा नहीं लेंगे ....

मुझे यह भी नहीं मालूम था कि बाबरी मस्जिद को ईटों से जोड़ने में इसलाम चूने की जगह इस्तेमाल किया गया है। *इसलाम चार दीवारों और गुम्बद का नाम नहीं है। इसलाम नाम है शांति का। इसलाम नाम है सच बोलने का। इसलाम नाम है अपने बदन और अपनी आत्मा को साफ रखने का। इसलाम नाम है पड़ोसियों के अधिकारों को सुरक्षित रखने का ... इसलाम किसी बादशाह की बनवायी हुई मस्जिद में अज़ान देने का नाम नहीं है।* मस्जिदों की हिफ़ाजत होनी चाहिए। लेकिन हिंदुस्तान में हज़ारों लावारिस मस्जिदें पड़ी हैं। चिमगादड़ों और कबूतरों के बीच और गाय-भैंस के गोबर से पटी हुई। यह शहाबुद्दीन एंड कम्पनी उन मस्जिदों का रुख क्यों नहीं करती? हमारे पंजाब में हिंदुओं और सिखों ने न जाने कितनी मस्जिदों को मंदिरों और गुरुद्वारों में बदल लिया है। सच्चे मुसलमानों की यह टोली वहां क्यों नहीं जाती।

दिलों के बीच दीवारें उठाने की साज़िश

पर यह इसलाम या हिंदू धर्म का चक्कर ही नहीं है। यह तो चक्कर है हिंदुस्तान को अंदर से कमज़ोर करने का। उसे अंदर से तोड़ने का। दिलों के बीच में दीवारें उठाने का। लमही नाम के एक गांव की मस्जिद का कोई इशतिहारी मूल्य नहीं है। बाबरी मस्जिद के साथ एक बड़ा नाम जुड़ा है - जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर! पहला मुगल बादशाह!

अल्लाह के नाम का कोई ऐतिहासिक मूल्य नहीं परंतु बाबर को तो सभी जानते हैं, जैसे बिड़ला को सब जानते हैं। और दिल्ली का सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध मंदिर कोई राम या कृष्ण मंदिर या कोई शिवालय नहीं है। दिल्ली का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है बिड़ला मंदिर। और यही होना भी चाहिए, क्योंकि आधुनिक भगवान रुपया है - जी हां वही रुपया जो सन् 76 के रुपये के मुकाबले में 15 या 20 पैसे भर रह गया है। वह पुराना वाला पैसा नहीं जो कुछ खरीद सकता था। नया पैसा जो कुछ खरीद ही नहीं सकता तो रुपया भगवान के मंदिर का नाम तो बिड़ला मंदिर ही हो सकता है। बिड़ला जो पूंजीपतियों के अमिताभ बच्चन हैं।

अब चूंकि बात बाबरी मस्जिद से चलती-चलती मंदिरों तक आ ही गयी है तो थोड़ी देर यहीं रुक लिया जाए। मैं यह मानता हूं (और यह मान कर मैं कोई कमाल नहीं करता क्योंकि यही सच है) कि मुगलों ने कुछ मंदिर गिरवाये, जहां आज मस्जिदें खड़ी हैं। यह उनकी बड़ी

बेहूदा हरकत थी क्योंकि यह इसलाम की परम्परा नहीं है। यह सही है कि पैगम्बर ने काबे के बुत तोड़े थे पर काबे का मामला राम जन्मभूमि से जरा अलग है। काबा इबराहीम यानी पैगम्बर के परदादा ने बनवाया था और उस पर अरब के मूर्तिपूजकों ने कब्ज़ा कर लिया था। पैगम्बर ने अपनी विरासत वापस ले ली थी और 'बैतुल्लाह' (अल्लाह का घर) को फिर बैतुल्लाह बना लिया था।

जो इस परम्परा का पालन किया जाए तब तो राम जन्मभूमि विश्व हिंदू परिषद को वापस मिल जानी चाहिए। पर मैं इस लेन-देन से सहमत नहीं हूं। इतिहास का पहिया उलटा चलाने का प्रयत्न ही देश को पीछे ले जाने का प्रयत्न है और इन दामों, न मुझे कोई मस्जिद चाहिए, न कोई मंदिर।

और कोई मुझे यह भी बताए कि यह कैसे साबित हुआ कि वही राम जन्मभूमि है।

कोई मुझे यह भी बताए कि राम जन्मभूमि का मंदिर गिराया जा रहा था तो क्या अयोध्या के सारे रामभक्त छुट्टी मनाने कहीं बाहर चले गये थे| या तब के हिंदू डालडा में तले हुए थे और विश्व हिंदू परिषद के लोग श्री घसीटाराम हलवाई की पूरियों की तरह शुद्ध घी में तले हुए हैं। हिंदूओं को यह बात इतने दिनों बाद क्यों याद आयी? यह सवाल मुझे बहुत परेशान कर रहा है।

परंतु अगर विश्व हिंदू परिषद वाले इस पर ठने हुए हैं कि उन्हें राम जन्मभूमि मंदिर वापस ही चाहिए तो पहले वह मेरी कुछ चीज़ें लौटाएं। सबसे पहले तो यह शब्द 'हिंदू' ही लौटाएं जो उनका नहीं। मिडिविल काल का सारा इतिहास, कलमी आम, खूबसूरत मेहराबें, गोल गुम्बद, राग यमन, कौल तराना, कव्वाली, मियां की टोड़ी, मियां का मल्हार, शहनाई लौटाएं। शाही टुकड़े, फीरीनी, बाकरखानी, शीरमाल, मुज़ाफर, पुलाव, बिरयानी लौटाएं। अंगूर, जाफरान, सेब लौटाएं। हिंदी, बंगला, गुजराती, मराठी, पंजाबी, सिंधी, मलियाली और तेलुगू शब्दावली के 30% से लेकर 45% तक शब्द लौटाएं। पदमावत वापस करें। रहिमन, कुतबन, कबीर, उसमान, ताज़ और रसखान वापस करें .... यह तो वह फ़िहरिस्त है जो लिखते-लिखते याद आ गयी। यह फ़िहरिस्त बहुत लम्बी है विश्व हिंदु परिषद के भाइयों और बहनों .....

घाटे का सौदा

यह सौदा हिंदुस्तान और हिंदुस्तान के हिंदुओं के लिए घाटे का सौदा होगा। क्योंकि मैं तो अपनी चीज़ें वापस लेने के बाद भी यहां रहूंगा क्योंकि यह मेरा वतन है। मैं इसी मिट्टी का बेटा हूं .....

मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं कि आज ही भूतपूर्व जनसंघी और आज के लोकदलीय श्री सुब्रमण्यम स्वामी ने मुसलमानों से अपील की है कि वे ऐसे सारे मंदिर हिंदुओं को लौटा दें जो मंदिर तोड़कर बनाए गए हैं, तो इससे नेशनल इंटिग्रेशन में बड़ी मदद मिलेगी| तो फिर भगवान बुद्ध की वह मुर्तियां भी लौटानी पड़ेंगी जो हिंदुओं ने तोड़ी थीं।

नेशनल इंटिग्रेशन हिंदुओं या मुसलमानों या सिखों या गुर्खों या मिज़ोरमियों को खुश करने का नाम नहीं है। इंटिग्रेशन समाकलन को कहते हैं और समाकलन कभी एकतरफा नहीं होता। समाकलन इतिहास के गड़े मुर्दे उखाड़ने का नाम नहीं है।

जिनकी जेबें काली होती हैं, वह बाप-दादा की दौलत के किस्सों पर जीते हैं। हिंदुस्तान के हिंदुओं और मुसलमानों, दोनों का यही हाल है। दोनों के वर्तमान की जेब में भविष्य का कोई सिक्का नहीं इसलिए दोनों ही अतीत के सिक्के खनकाते रहते हैं, इस बात पर ध्यान दिये बिना कि आज के बाज़ार में उन सिक्कों का चलन ही नहीं है!

आज हिंदुस्तान बहुत खतरे में है। राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद का तो कोई महत्व ही नहीं। देश में

बेरोज़गारी है, भुखमरी है, बड़े शहरों की हवा मैली होती जा रही है, जंगल खत्म हो रहे हैं और इसकी वजह से सारे मौसम बेईमानी पर उतर आये हैं। नकली दवाएं खाकर लोग मर रहे हैं। विद्यार्थियों में दिशा का ज्ञान न होने के कारण एक बेचैनी है। सपनों की ऐनक लगाकर भी लोग नौकरी के सिवा कुछ देख नहीं पाते। राजनीति का आसमान इतना नीचा हो गया है कि कोई सर उठाकर खड़ा नहीं हो सकता। .....

ऐसे में धर्म की लाठी भांजना बहुत आसान है। इसकी सबसे अच्छी मिसाल सर्वश्री बाल ठाकरे हैं। जब तक वह महाराष्ट्र मराठी, मराठी के ध्वज फहराते रहे, शिव सेना एक छोटी पार्टी ही बनी रही। स्माल स्केल इंडस्ट्री। तो श्री बाल ठाकरे एकदम से हिंदू हो गए। हिंदू होने का सबूत देने के लिए वह मुसलमानों को गालियां देने लगे..... और शिव सेना के हिंदू होते ही शिव सेना इतनी बड़ी ताकत बन गई कि उसने मुम्बई कारपोरेशन के चुनाव में कांग्रेस (आई) की ऐसी-तैसी करके इसे कांग्रेस गई बना दिया। अभी-अभी एक गैर मराठी कांस्टीटुएंसी से उसने भारतीय जनता पार्टी से सीट जीत ली और शिव सेना के जीते हुए कैंडिडेट ने यह बयान दिया कि उसकी जीत हिंदू धर्म की जीत है। मतलब शिव सेना भारतीय जनता पार्टी से भी ज़्यादा हिंदू है।

<u>राजनीति की हवा का रुख</u>

अब आप राजनीति की हवा का रुख देखिए। पंजाब अकालियों के हाथ में है। महाराष्ट्र शिव सेना को पनपा रहा है। आंध्र प्रदेश तेलुगूदेशम के हाथ में है और मुख्यमंत्री एक हिंदू सन्यासी का रूप धरे हुए हैं।

उत्तर प्रदेश, राम जन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के चंगुल में आता जा रहा है।

क्षेत्रवाद की रगों में धीरे-धीरे धार्मिक साम्प्रदायिकता का गंदा खून चढाया जा रहा है। एक तो करेला, और फिर नीम चढ़ा।

यदि हमें अपने देश से चुनाववादी प्यार नहीं बल्कि सचमुच का प्यार है तो उसे धर्म के दीमक से बचाना पड़ेगा और यदि हमने जल्दी ही इसकी तरफ ध्यान नहीं दिया तो यह दीमक हमारे इस देश को चाट कर खत्म कर देगा। इसलिए मैं श्रीराम और अल्लाह मियां दोनों ही से अपील करता हूं कि वापसी डाक से विश्व हिंदू परिषद और सैयद शहाबुद्दीन एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड को तार द्वारा सूचना दें कि उनके पास मंदिर-मस्जिद ज़रूरत से ज़्यादा हैं।

इसलिए जहां श्रीराम जन्मभूमि मंदिर और बाबरी मस्जिद हैं, वहां इस मंदिर और मस्जिद को गिराकर बच्चों के लिए एक पार्क बना दिया जाये। क्योंकि फूलों के बीच खेलते हुए बच्चों से ज़्यादा खूबसूरत कोई दृश्य हो ही नहीं सकता।

इसीलिए आदरणीय अल्लाह मियां और आदरणीय श्रीराम जी यदि आपको सैयद शहाबुद्दीन और विश्व हिंदू परिषद के डाक पते न मालूम हों तो कृपया उनके नाम लिखे अपने पत्र मेरे पते पर भेज दीजिए। मैं आपके पत्र इन लोगों के पास पहुंचा दूंगा।

10 देवदूत, बांद्रा बैंड स्टैंड,
बांद्रा,
बम्बई - 400 050

(गंगा के मार्च 1987 अंक से साभार)

"साम्प्रदायिकता हमेशा संस्कृति की दुहाई दिया करती है, उसे अपने असली रूप में निकलते शायद लज्जा आती है, इसलिए वह गधे की भांति जो सिंह की खाल ओढ़कर आती है। हिन्दू अपनी संस्कृति कयामत तक सुरक्षित रखना चाहता है। मुसलमान अपनी संस्कृति को, दोनों ही अपनी-अपनी संस्कृति को अभी तक अछूती समझ रहे हैं, यह भूल गये हैं कि अब न कहीं मुस्लिम संस्कृति है, न कहीं हिन्दू संस्कृति, अब संसार में केवल एक संस्कृति है और वह है आर्थिक संस्कृति।"

प्रेमचन्द

आदाब

समरेश बसु

कंपती खामोश रात, तभी एक फौजी गाड़ी हड़हड़ाती हुई आयी और इस कंपकंपी को और भी झुरा गयी। उसने विक्टोरिया पार्क के गिर्द चक्कर लगाया और गुज़र गयी। शहर में धारा 144 लगी हुई है और कर्फ्यू बहाल है। हिंदू और मुसलमान के बीच दंगा हुआ है। आमने सामने छिड़ी इस लड़ाई में हंसुआ, दाव, बल्लम, छड़-छुरा, लाठी, कटार और तलवार सबका खुलकर खेल हुआ है। इतना ही नहीं, घात लगाकर वार करने वाले गिरोह गुप्त और घातक हथियार लेकर अंधेरे में छुपे बैठे हैं।

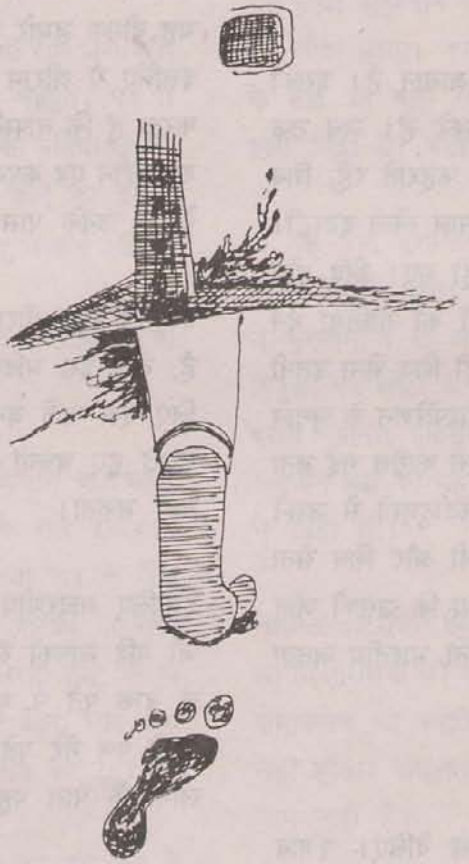

चोर-उचक्के और लुटेरे भी मौके की टोह में बैठे हैं। मार-काट और मौत के आंतक में डूबी इस अंधेरी गूंगी रात ने उनके हौसले और इरादे को और भी बढ़ा दिया है। किसी-किसी इलाके में मौत के डर से कातर स्त्रियों और बच्चों के चीत्कार और हाहाकार से वहां का वातावरण और भी डरावना हो उठा है। और इसके ऊपर से इन फौजी गाड़ियों की आवाजाही। चारों ओर शाति और व्यवस्था बनाये रखने के लिए सैनिकों ने अंधाधुंध गोलाबारी की है।

दो तरफ से दो गलियां आकर एक जगह मिल गयी हैं। इन दोनों गलियों के बीचोंबीच एक डस्टबिन औंधी पड़ी है - टूटी-फूटी हालत में। तभी घुटने के बल चलता हुआ एक आदमी तेजी से गली के अंदर से निकला और उसकी आड़ में छुप गया। अपना सिर उठाकर ऊपर या इधर- उधर देखने का उसे साहस नहीं हुआ। वह कुछ देर तक मुर्दे की तरह वहीं पड़ा रहा और चौकन्ना होकर दूर से आती हुई आहट को पकड़ने की कोशिश करता रहा। वह कुछ समझ नहीं पाया कि यह आवाज कैसी है 'अल्ला हो अकबर' की या 'भारत माता की जय' की। अचानक डस्टबिन में थोड़ी-सी हरकत हुई। उसकी देह की एक-एक रग और नस जैसे झनझना उठी। उसके जबड़े भिंच गये और हाथ-पांव अकड़ गये। वह इस बात के लिए पूरी तरह तैयार हो गया कि अगला क्षण चाहे जितना भी कठोर हो, झेल लेगा। कुछ क्षण इसी तरह बीते। चारों ओर इसी तरह एक अपाहिज खामोशी टंगी रही।

शायद कोई कुत्ता था। उसे भगाने के लिए उस आदमी ने डस्टबिन को आगे की तरफ थोड़ा-सा खिसकाया। थोड़ी देर फिर चुप्पी रही लेकिन यह क्या- वह फिर डुल गयी। उसे भय के साथ-साथ थोड़ा कौतूहल भी हुआ। धीरे-धीरे उसने अपना सिर उठाया-उधर से भी ठीक वैसा ही एक सिर हौले-हौले ऊपर उठता नज़र आया। अच्छा तो यह कोई आदमी है।

डस्टबिन के दोनों ओर दो प्राणी बिना कोई हलचल और हरकत के, माटी के लौंदे की तरह जमे बैठे थे। उनके दिल की धड़कनें भी जैसे थम गयी थीं। दो जोड़ी-पथरायी ठंडी आंखों में, धीरे-धीरे भय-आतंक-संदेह और उत्तेजना गहराती चली गयी। कोई किसी पर विश्वास नहीं कर रहा था। दोनों एक दूसरे की निगाह में हत्यारे थे। आंखों-आंखों में ही, वे एक दूसरे पर हमला करने की तैयारी में बैठे रहे। इसी इंतज़ार में दोनों की आंखों की पुतलियों से फूटती चिनगारियां धीरे-धीरे ठंडी हो गयीं। हमला किसी भी तरफ से नहीं हुआ। अब दोनों के मन में यही एक सवाल कौंध रहा था-'यह हिंदू है या

मुसलमान?' इस सवाल का जवाब मिलते ही, हो न हो, कोई प्राणघातक हमला ज़रूर होगा। लेकिन कोई किसी से यह पूछने का साहस जुटा नहीं पाया कि क्या पूछना चाहिए। दोनों अपनी जान के डर से, वहां से कहीं भाग भी नहीं सकते थे। पता नहीं, कौन कहां से, हाथ में कटार लेकर टूट पड़े।

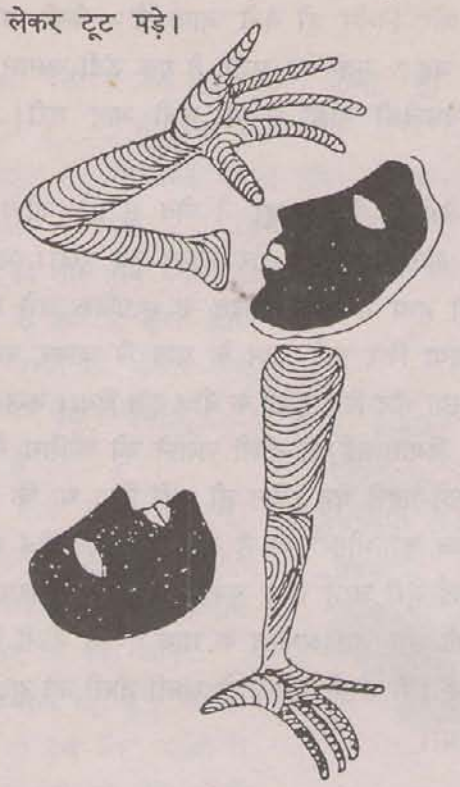

काफी देर तक इसी संदेह और पशोपेश में दोनों पड़े रहे और दोनों का ही सब्र टूटा जा रहा था। आखिर में एक ने पूछ ही लिया, "हिन्दू हो कि मुसलमान?"

"पहले तुम बताओ", दूसरे ने जवाब न देकर पहले का सवाल लौटा दिया। पहचान की पहल करने के लिए दोनों में से कोई तैयार न था। संदेह के झूले में दोनों का मन झूल रहा था। पहला सवाल दब गया और एक दूसरा सवाल उभरा। एक ने पूछा, "घर कहां है?"

"बूढ़ी गंगा के इस पार-सुबड्डा में। तुम्हारा?"

"चाशड़ा में-नारायण गंज के पास। करते क्या हो?"

"मेरी एक नाव है - माझी हूं मैं - और तुम?"

"नारायण गंज के सूती मिल में काम करता हूं।"

फिर वही चुप्पी। हाथ को हाथ न सूझने वाले अंधकार में दोनों की आंखें एक दूसरे का चेहरा टोह-टटोल रही थीं। साथ ही, यह भी देखने की कोशिश कि दोनों ने कैसे कपड़े पहन रखे हैं। अंधेरा तो था ही, डस्टबिन की आड़ की वजह से भी इसे देख पाने में कठिनाई हो रही थी। अचानक, बहुत पास ही कोई हो-हल्ला-सा मचा। दोनों ही पक्ष के लोग चीख-चिल्ला रहे थे। सूत कारखाने का मजूर और नाव का माझी-दोनों ही थोड़ी देर के लिए विचलित हो उठे।

सूती मिल मजूर के गले से भर्रायी-सी आवाज़ निकली, "लगता है, घाट किनारे ही कहीं मारकाट मची है।"

"हां-चलो यहां से कहीं और चलें" माझी की आवाज़ भी बुझी हुई थी।

सूती-मिल मजूर ने रोका, "अरे नहीं भाई .... उठना नहीं .... अपनी जान देनी है क्या?"

माझी का मन एक बार फिर शंका में पड़ गया। कहीं इस आदमी की नीयत तो बुरी नहीं। उसने कारखाने के मजूर की आंखों में झांकने की कोशिश की। सूती मिल का मजूर भी उसे ही घूरे जा रहा था। आंखें चार हुईं तो बोला, "बैठे रहो। जैसे पड़े हो वैसे ही!"

माझी का दिल उसकी बात सुनकर बैठ गया। तो क्या वह उसे जाने नहीं देगा। उसकी आंखों में संदेह का भाव एक बार फिर गाढ़ा हो आया, उसने पूछा, "क्यों?"

"क्यों ...... क्या ...." सूतमिल-मजूर बोला, "क्या मरना चाहते हो तुम?"

माझी को यह सुनकर कुछ अच्छा नहीं लगा। बात कही भी गयी थी बड़े बेतुके ढंग से। उसके मन में होनी-अनहोनी जैसी कई तरह की बातें बड़ी गहराई से जड़ें जमाकर बैठी हुई थीं। "जाऊंगा नहीं तो क्या यहीं इसी अंधी गली के अंदर पड़ा रहूंगा?"

इस आदमी की जिद देखकर मजूर के मन में भी संदेह पैदा हुआ। वह जैसे अंधेरे को अपने जबड़े से चबाता हुआ बोला, "मतलब क्या है तुम्हारा ...... मुझे तो तुम्हारी बात में खोट नज़र आ रहा है। तुमने यह भी नहीं बताया

कि तुम किस जात के हो-ऐसा तो नहीं कि बाद में अपने लोग-बागों को बुला-बटोरकर मुझपर ही टूट पड़ो।"

"यह क्या कह रहे हो तुम?" माझी स्थान और समय की नजाकत की अनदेखी करता, गुस्से और गम में लगभग चीखकर बोला।

"मैंने ठीक ही कहा मेरे भाई-बैठे रहो। लोगों के मन की बात भी नहीं बूझ पाते?"

मजदूर की बातों में ऐसा कुछ तो था कि माझी को थोड़ा भरोसा हो आया। बोला, "तुम चले गये तो मैं यहां अकेला थोड़े ही बैठा रहूंगा?"

शोरगुल कहीं दूर जाकर थम गया। अंधेरी रात एक बार फिर मौत की तरह ही खामोश और ठंडी हो गयी। कुछेक क्षण मौत की प्रतीक्षा करते ही बीते जैसे। अंधेरी गली के बीचोंबीच और औंधे पड़े डस्टबिन के दोनों ओर दो प्राणी अपनी-अपनी मुसीबतों, घर के लोगों, मां-बीवी और बच्चों के बारे में सोच रहे थे।

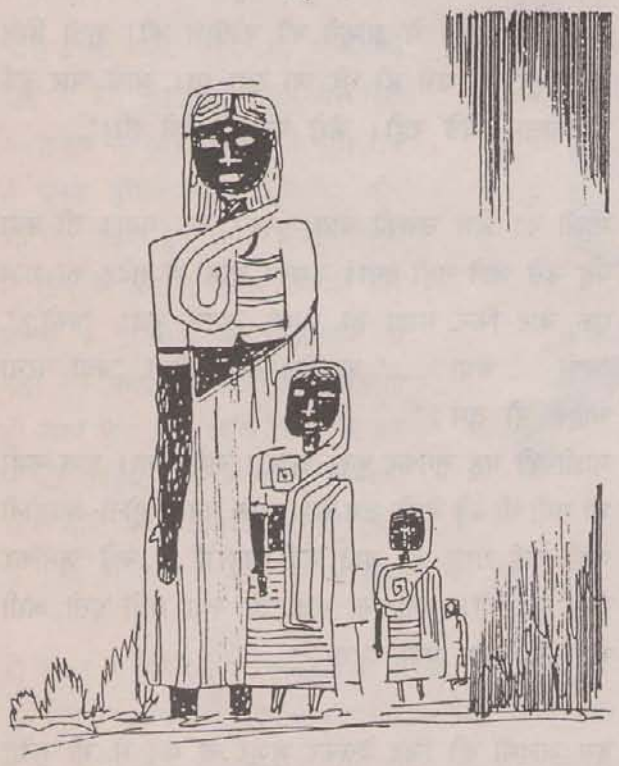

क्या अब उन लोगों तक अपनी-अपनी जान बचाकर ये दोनों किसी तरह भी पहुंच पायेंगे, और इसकी क्या गारंटी है कि वे सब ही जीवित मिलेंगे - न कोई बात-न विचार-न सर न पांव-पता नहीं कहां से यह मुआ दंगा किसी ठनके की तरह सिर पर आ गिरा। अभी-अभी तो हाट-बाज़ार दुकान में इतनी हंसी-खुशी, गप-बाजी और कहकहों का सिलसिला जारी था और पलक झपकते ही मारकाट और खून की गंगा बहाने को उतारू लोग। आखिर आदमी इतना निष्ठुर और निर्मम हो कैसे जाता है? कैसी अभिशप्त जात है यह? सूत-कल-मजूरे ने एक ठंडी उसांस भरी। उसकी देखादेखी माझी ने भी लंबी आह भरी।

"बीड़ी पीओगे," मिल-मजूरे ने जेब से एक बीड़ी बाहर निकाली और माझी की ओर बढ़ाते हुए पूछा। माझी ने बीड़ी को हाथ में लेकर आदत के मुताबिक उसे दो-एक बार दबाया फिर दायें कान के पास ले जाकर कई एक बार घुमाया और फिर होठों के बीच ठूंस दिया। कल-मजूरा अब भी दियासलाई की तीली जलाने की कोशिश में लगा था। उसने पहले यह ध्यान ही नहीं दिया था कि उसका कुरता कब का भीग चुका है और कुरते की जेब में रखी दियासलाई बुरी तरह सील चुकी है। कई-कई बार तीली घिसने की खस-खस आवाज़ के साथ एकाध नीली चिंगारी कौंधी। अंत में उसने मसाले से खाली तीली को झुंझलाकर फेंक दिया।

"साली माचिस भी और तीली भी गीली हो गयी है," कहकर अब उसने एक दूसरी तीली बाहर निकाली। माझी अब तक अपना धीरज खो चुका था। वह मजूर के तनिक पास खिसक आया।

"अरे जलेगी .... जलेगी .... लाओ मुझे दो .... दो मुझे....." कहते हुए माझी ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और मिल-मजूरे से उसने एक तरह से माचिस छीन ही ली। दो-एक बार ...... खस.....खस.... की आवाज़ हुई और तीली सचमुच ही जल गयी।

"सुभान अल्लाह ...... लो ..... सुलगाओ ...... जल्दी .....हां!"

मिल-मजूरा एकबारगी चौंक पड़ा। लगा कि उसने कोई भूत देखा हो। भिंचे हुए होठों बीच फंसी बीड़ी नीचे गिर पड़ी।

"तो--तुम ?"

तभी हवा का एक हल्का-सा झोंका आया और तीली बुझाकर चला गया। इस बीहड़ अंधेरे में एक बार फिर दो जोड़ी आंखें अविश्वास की उत्तेजना में बड़ी हो गयीं। कुछेक पल इसी ठंडी खामोशी में बीते।

माझी भी तेज़ी से उठ खड़ा हुआ। बोला, "हां ...... मैं मुसलमान हूं ..... तो क्या हुआ ?"

कल मजूरे ने डरते-डरते जवाब दिया, "कुछ भी नहीं ..... हुआ .... लेकिन ......" उसने माझी के बगल में रखी पोटली की ओर हाथ बढ़ाते हुए पूछा, "उसमें क्या है ?"

"बच्चों के लिए दो कुरते और उनकी अम्मी की खातिर एक साड़ी। कल ईद का दिन है ...... मालूम है .... ?"

"दूसरी कोई चीज तो नहीं ...." सूती मिल का मजदूर जैसे उसकी बातों पर विश्वास नहीं कर पा रहा था।

"मैं झूठ कह रहा हूं ? भरोसा न हो तो देख लो," माझी ने अपनी पोटली को मिल मजूरे की तरफ बढ़ा दिया।

"अरे यह बात नहीं है भाई, देखने को क्या है भला ? लेकिन आजकल जैसी हवा चल रही है ...... तुम देख ही रहे हो। किसी पर भरोसा किया जा सकता है ..... तुम ही बताओ ?"

"बस यही तो रोना है .... अच्छा भाई, तुमने तो अपने पास ऐसा ..... वैसा कुछ रखा नहीं तो ?"

"भगवान की कसम खाकर कह सकता हूं कि एक सूई तक नहीं। अपनी जान बचाकर किसी तरह घर लौट सकूं यही बहुत है।" और मिल मजूरे ने अपने कुरते और घुटने के ऊपर तक चढ़ी धोती को झाड़-झटक दिया। दोनों अगल-बगल सटकर बैठ गये। फिर दोनों बीड़ी सुलगाकर चुपचाप सूंटा मारते रहे और उसी में डूबे रहे।

"अच्छा ......" माझी इस तरह घुल-मिल कर बातें करता रहा मानो वह घर के ही किसी आदमी या नाते-रिश्तेदार से बतिया रहा हो।

"अच्छा .... तुम बता सकते हो मुझे ? ...... अरे.... मां-बेटी और बच्चों को काट पीटकर क्या मिलना है ?"

सूती मिल मजदूर को अखबारों में छपी खबरों की थोड़ी बहुत जानकारी थी। उसने सूखे गले से अटकते-अटकते कहा, "अब गलती तो तुम्हारे उन्हीं लीग वालों की है। आग तो उन्होंने ही लगायी है और इस दंगे को संग्राम का नाम दे दिया है।"

माझी ने भी मीठी चुटकी लेते हुए कहा, "मैं यह सब नहीं समझता, मेरा कहना है कि इस मारकाट से होगा क्या ? दो ठो लोग तुम्हारे मारे जायेंगे और दो ठो हमारे ...... उससे इस देश का क्या बनेगा-बिगड़ेगा ?"

"अरे मैं भी तो यही कह रहा हूं। किसको क्या मिलेगा, मिलेगा मेरा यह घंटा।" कहते हुए मिल मजदूर ने अपना अंगूठा आगे बढ़ा दिया, "मरोगे तुम .... मारे जायेंगे हम...और हमारी बीवियां-बेटियां भीख मांगती फिरेंगी।

अभी पिछले बार के दंगे में मेरे बहनोई के जिस्म के टुकड़े-टुकड़े कर फेंक दिया गया। बहन विधवा हो गयी। उसके बेटी-बेटे आकर मेरी गर्दन पर सवार हो गये हैं। अब किसके आगे जाकर रोयें और अपना दीदा फोड़ें। नेता सब अपने सतखडे महल के ऊपर पांव पर पांव चढ़ाकर बस फरमान जारी कर देते हैं और मरने-कटने को तो हम सब हैं ही।"

"हम जैसे आदमी ही नहीं, कुत्ते के पिल्ले हो गये हैं, वर्ना इस तरह एक दूसरे को काटते क्यों, एक दूसरे पर झपटते और भौंकते ही क्यों ? "यह कहते माझी ने उस गुस्से में, जिसमें कुछ होने-जाने वाला नहीं था, अपने घुटने को पकड़कर कांपने लगा।"

"हां, बात ठीक ही है ....."
"हमारे बारे में कोई सोचता भी है? अब यही जो दंगा हुआ .... उसमें ऐसा कौन नाते-रिश्ते वाला है साला....जो दो दाना जुटा देगा। वापस घाट जाने पर नाव खड़ी मिलेगी भी...... कोई बता सकता है? जमींदार रूपनाराइन बाबू के घर के मुंसी हर महीने एक बार मेरी नाव पर जाते रहे---वही नइराचर पर कचहरी के काम से। क्या बतायें, बाबू का हाथ तो जैसे हजरत का हाथ है। पांच रुपैया बख्शीश के और पांच रुपैया नाव का किराया--एक ही बार में दस रुपैया। बाबू के उसी दस ठो रुपैये में मेरे घर की महीने भर की खाना-खोराकी जुट जाती रही। अब कोई हिंदू बाबू मेरी नाव पर पांव भी रखेगा.......!" माझी की आवाज़ बुझ गयी।

सूती कारखाने का मजूर कुछ कहना चाहता था लेकिन एक बारगी थम गया......... भारी बूटों की तेज आहट सुनायी पड़ रही थी, यह आवाज सामने वाली मुख्य सड़क से गली की तरफ बढ़ती हुई जान पड़ी। अब इसमें कोई संदेह नहीं रहा। दोनों के मन में एक शंका भरी उत्सुकता पैदा हुई और दोनों ने एक दूसरे की आंखों में देखा। "मैं क्या करूं अब?" माझी ने अपनी पोटली को कांख में दबाते हुए पूछा।

"चलो भाग चलें, लेकिन जायें भी तो कहां? मैं तो इस शहर की गलियों और राहों को ठीक से जानता तक नहीं।"
"जिस किसी तरफ भी-चल भाग चलें, हम खामखाह पुलसवालों की मार क्यों खायें भला, मुझे इन जालिमों का एकदम भरोसा नहीं।"
"हां- ठीक ही कहा तुमने। लेकिन जाओगे किस तरफ-पुलिस वाले तो बस आये ही समझो--"

"उस तरफ" -- इस गली का जो सिरा दक्खिन की ओर निकल गया था-- उसी तरफ माझी ने इशारा किया, फिर धीमे स्वर में बोला, "चलो-अगर किसी तरह भी यहां से भाग सकें और बादामतला घाट तक पहुंच सकें तो फिर आगे कोई डर नहीं।" दोनों ने अपना सिर नीचे की ओर किया और दम साधकर दौड़ पड़े सीधे पटुआटोली वाली सड़क की तरफ-सुनसान सड़क बिजली की रोशनी से जगमगा रही थी। दोनों के पांव एक साथ रूक गये। अचानक-कहीं कोई घात लगाकर बैठा तो नहीं? लेकिन यह सब सोचने-समझने का भी समय कहां है किसी के पास? नुक्कड़ के पास एक बार इधर-उधर देखकर दोनों सीधे पच्छिम की तरफ भागे। कुछ आगे बढ़े ही थे कि उन्हें घोड़े की टाप की आवाज़ सुनाई पड़ी। उन्होंने गर्दन ऊंची कर देखा-दूर से एक घुड़सवार इधर ही आता जान पड़ा। सोचने का समय नहीं।

बायीं तरफ की उस संकरी-सी गली में उधर से संडास साफ करने के लिये मेहतर जाते-आते हैं-दोनों उसी में घुस गये और सिकुड़कर बैठ गये। थोड़ी देर बाद ही वह घुड़सवार बड़ी तेजी से हाथ में नंगी पिस्तौल लिए जैसे

उनके सीने पर से गुज़र गया। दोनों के सीने में घोड़े की टाप काफी देर तक बजती रही। दिल में सिहरन पैदा करने वाली यह आवाज़ जब एकदम खामोश हो गयी तब दोनों एक बार फिर आहिस्ता-आहिस्ता कदम बढ़ाते आगे-आगे निकल पड़े।
मिल मजूरा बोला "सड़क के किनारे रहो।"

वे दोनों बुरी तरह डरे हुए थे और सड़क के एकदम किनारे लगकर तेजी से पांव बढ़ाते चले जा रहे थे।
"रुको .... " अचानक माझी ने दबे स्वर में कहा।
"क्या हुआ?" सूत-मिल मजूरा के पांव रुक गए और वह बदहवास-सा दिखा।
"उधर देखो......"
माझी ने जिधर इशारा किया था, मजदूर ने उधर देखा। लगभग सौ गज की दूरी पर एक मकान था, जिसमें रोशनी जल रही थी। नीचे की तरफ ऊंचे से बरामदे पर दस-बारह बंदूक धारी पहरेदार जले हुए पेड़ के तने की तरह खड़े दिख रहे थे। उनके सामने एक अधिकारी तमक-तमक कर क्या कुछ बोल रहा था। उसके मुंह से पाइप लगी थी और उसके बेतरतीब धुएं में वह अपना हाथ-मुंह हिलाए चला जा रहा था। बरामदे के नीचे घोड़े की लगाम पकड़े कोई दूसरा घुड़सवार खड़ा था। घोड़ा उत्तेजित दिख रहा था। और घोड़ा जमीन पर बार-बार अपने पांव पटक रहा था।

माझी बताने लगा, "वह रही इसलामपुर पुलिस फांडी। यहां से थोड़ी दूर पर फांडी के पास से ही, बायीं तरफ एक गली आगे निकल गयी है। मुझे उसी गली से बादामतला घाट की ओर जाना होगा।"
मजदूर का चेहरा फक हो गया। उसने घबड़ाकर पूछा। "तो फिर?"
"तभी तो मैं कह रहा था कि तुम यहीं रुको। घाट पहुंचकर तुम्हारा कोई काम नहीं बनेगा।" माझी कहता रहा। "हिंदुओं का इलाका है और इसलामपुर मुसलमानों की बस्ती है। तुम कल सुबह होने पर अपने घर की ओर निकल जाना।"

"और तुम?"
"मैं तो अभी जाऊंगा।" माझी की आवाज उद्वेग और आशंका से जैसे बिखरती चली गयी। "मैं नहीं रुक सकता भाई। पिछले आठ दिनों से घर में क्या कुछ हुआ है। पता नहीं। अल्ला-ताला ही जानते होंगे। किसी तरह उस गली में घुस पाया तो आगे भी ठीक ही होगा। अगर नाव नहीं मिली तो बूढ़ी गंगा को तैरकर पार कर जाऊंगा।"
"अरे नहीं मियां भाई-यह क्या कर रहे हो तुम?" मिल मजूरे ने माझी की कुचैली कमीज़ का निचला सिरा कसकर पकड़कर फिर कहा, "कैसे जाओगे ......तुम......वहां......... हां......?"

माझी की आवाज़ अब भी उत्तेजना में कंप रही थी। "मुझे मत रोको भाई-जाने दो ...... तुम्हें पता नहीं शायद .... कल ईद परब है। बीवी-बच्चों ने आज ईद का नया चांद देखा होगा।
उन सबके मन में कैसे-कैसे हौसले होंगे....... नये कपड़े पहनेंगे ..... अब्बाजान की पीठ पर चढ़ेंगे ..... गोद में बैठेंगे .... बीवी की आंखों के आंसू तो सूख ही नहीं पा रहे होंगे। मैं अपने को रोक नहीं पा रहा भाई.... मेरा मन कलप रहा है...।"

माझी का गला भर आया। मिल-मजदूर के सीने में भी हूक-सी उठी और उसकी कसी उंगलियां ... ढीली पड़ गयीं।
"और अगर वे तुम्हें .....पकड़ लें....." भय से कातर मिल मजूरे की आवाज रुआंसी हो आयी।
"अरे नहीं पकड़ पायेंगे? तुम इतने डर क्यों रहे हो? और सुनो, यहीं-कहीं आसपास बैठे रहो......मैं अब चलूं .... इस रात की बात कभी भूल नहीं पाऊंगा। नसीब में लिखा होगा तो कभी न कभी ज़रूर मुलाकात होगी.......आदाब......"
"आदाब...... मैं भी इस रात को कभी नहीं भूल पाऊंगा भाई!"
माझी दबे कदमों से आगे बढ़ चला। मिल मजूरा भरे हुए दिल और भरी हुई आंखों से उसे निहारता रहा।

उसके दिल की तेज धुकधुकी थम ही नहीं पा रही थी। उसके कान पूरी तरह चौकस थे....हे भगवान ......बेचारा माझी किसी विपदा में न फंस जाए।

वह थोड़ी देर तक इसी तरह दम साधे खड़ा रहा। कुछ देर बाद-उसे लगा कि माझी अब तक निकल चुका होगा। उसके सारे घर वाले-बीवी और बच्चे कितनी खुशी से नये-नये कपड़े पहनेंगे....खुशियां मनायेंगे। और बच्चे तो बाप के कलेजे का टुकड़ा ही होते हैं... मिल मजूरे ने एक गहरी उसांस भरी। मियां माझी की बीवी मीठे उलाहने के साथ आंखों में आंसू भरकर उसके सीने से लग जायेगी।

"मौत के मुंह तक पहुंचकर भी तुम बचे हुए हो न भ्रैया माझी?" मजदूर के होठों पर हल्की-सी मुस्कान खेल गयी। और इसके बाद माझी क्या करेगा? माझी तब .....

"हाल्ट ! .... !"

मिल मजदूर का कलेजा धक.....से रह गया। और साथ ही भारी बूटों के दौड़ने की आवाज़। कौन हैं ये.... जो ज़ोर-ज़ोर से चीख-चिल्ला रहे हैं...

"डाकू भाग रहा है....."

मिल मजदूर ने अपनी गर्दन निकालकर देखा। पुलिस अफसर अपनी मुट्ठी में रिवॉल्वर खींचकर दौड़ पड़ा है। फिर पूरे इलाके की सर्द खामोशी को कंपाते हुए उसकी रिवॉल्वर की आवाज़ दो बार कौंधी........

"गुडुम.......गुडुम......म........म.......म.....!.......!"

दो बार नीली चिनगारियों की झलक। मिल मजदूर इस उत्तेजना में पता नहीं कब अपनी एक उंगली चबाता रहा। उसकी आंखें फटी की फटी रह गयीं। पुलिस अफसर पास ही घोड़े पर सवार होकर गली के अंदर दाखिल हुआ। उस 'डाकू' की आखिरी चीख भी सुनी थी उसके कानों ने।

मिल मजदूर की बेचैन आंखों के सामने माझी के सीने का खून बहता रहा। उस खून में उसके बीवी...और बच्चे सभी बह रहे थे... उसी खून से उसकी बीवी की साड़ी-चोली लाल हो गयी थी। माझी कह रहा था "मैं अपने घर तक नहीं पहुंच सका भाई। मेरे नन्हें-मुन्ने ..... मेरी बीवी....सभी परब के दिन आंसू की बूढ़ी गंगा में डूब गये। दुश्मनों ने मुझे उनके पास पहुंचने नहीं दिया......।"

अनुवाद - रणजीत साहा

साभार - 'हंस' अप्रैल 1988

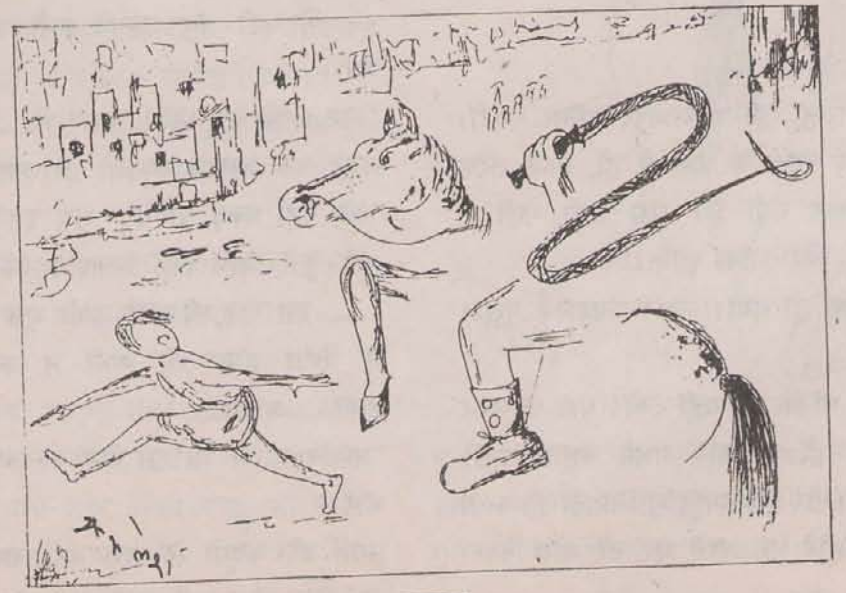

मस्जिद बनाम मंदिर

सवाल ताकत का

1

इस विशाल धरती पर न राम के लिए मंदिरों की कमी है न अल्लाह के लिए मस्जिदों की कमी है। अगर कमी है तो केवल लोगों के दिल में जगह की कमी है। आज राम के मंदिर और अल्लाह की मस्जिद के नाम पर लोगों के दिलों को इतना संकुचित किया जा रहा है कि उनमें न राम के लिए जगह बची है न अल्लाह के लिए।

दरअसल आज सवाल राम या अल्लाह का नहीं है - सवाल है लोगों को मज़हब के नाम बांट कर रणभूमि में खड़ा करने के प्रयासों का। जो ताकतें आज लोगों को आपस में भिड़ा रही हैं, वे उतनी ही पुरानी हैं जितना इस देश का बहुधर्मीपन है। कभी जैन व ब्राह्मणों को लड़वाया, कभी ब्राह्मणों और बौद्ध धर्म के अनुयायियों को लड़वाया, कभी शैव व वैष्णवों को लड़वाया और कभी हिन्दुओं व मुसलमानों या फिर कभी हिन्दुओं व सिक्खों को लड़वाया।

ये वो ताकतें हैं जो ईश्वर को मनुष्य के दिल में नहीं बल्कि मंदिरों व मस्जिदों में बसाना चाहती है, ये वो ताकतें हैं जो ईश्वर को पूजा-पाठ, रोज़े, नमाज़ जैसे धार्मिक कृत्यों के पीछे छिपाये रखना चाहती हैं। इनकी वास्तविक लड़ाई एक दूसरे से नहीं - सनातनी की लड़ाई मौलवी या मौलवी की लड़ाई पडित से नहीं बल्कि उनसे है जो ईश्वर को मनुष्य के दिल में बसाना चाहते हैं, और इस तरह मनुष्य के दिल को धरती जैसा विशाल बनाना चाहते हैं और प्यार और भाई-चारे को ही इबादत का तरीका बनाना चाहते हैं।

पडितों और मौलवियों को खतरा एक दूसरे से नहीं बल्कि कबीरों व नानकों से होता है।

2

राम का जन्म कहां हुआ किसे पता?

आज यह दावा है कि ठीक उस जगह जहां एक मस्जिद बनी हुई है, वहां राम का जन्म हुआ था। अतः वह स्थान हिन्दुओं के लिए पूजनीय है और वहां पर मस्जिद की जगह मंदिर बनना चाहिए। सबसे पहले यह स्पष्ट होना चाहिए कि किसी के जन्मस्थान का पूजन हिन्दू परंपरा में नहीं है। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि हिन्दू धर्मग्रंथों में जन्म स्थान पूजन को महत्वपूर्ण बताया गया हो। यात्रा में पूरे शहर, उसके सारे मंदिर व घाट पवित्र और पूजनीय माने गए हैं, न कि एक विशेष जगह। इतिहास के प्रामाणिक स्रोत-ग्रंथों या शिलालेखों में किसी भी देवी-देवता के जन्मस्थान पर बने मंदिर का उल्लेख नहीं है।

किसी के जन्म के सैंकड़ों या हज़ारों साल बाद प्रामाणिक रूप से यह कैसे कहा जा सकता है कि उसका जन्म इसी खास जगह पर हुआ?

दरअसल यह बताना इतिहासकारों का काम है। सबसे पहले तो यह देखना है कि आज के अयोध्या शहर के उस खास स्थान को कब से राम जन्मस्थान कहा जा रहा है? अगर यह स्थापित होता है कि शुरू से लगातार उस जगह को राम जन्म स्थान कहा जा रहा है तो इस दावे को काफी जोर मिल सकता है। उदाहरण के लिए बुद्ध की मृत्यु के 200 वर्ष बाद राजा अशोक ने लुम्बिनी नाम की जगह में एक स्तंभ स्थापित किया और उस में खुदवाया कि इस गांव में बुद्ध ने जन्म लिया था। अतः हम कुछ भरोसे के साथ कह सकते हैं कि शायद वास्तव में बुद्ध का जन्म वहां हुआ होगा। ध्यान देने योग्य है कि अशोक भी यह दावा नहीं करता कि इसी

खास स्थान पर बुद्ध का जन्म हुआ।

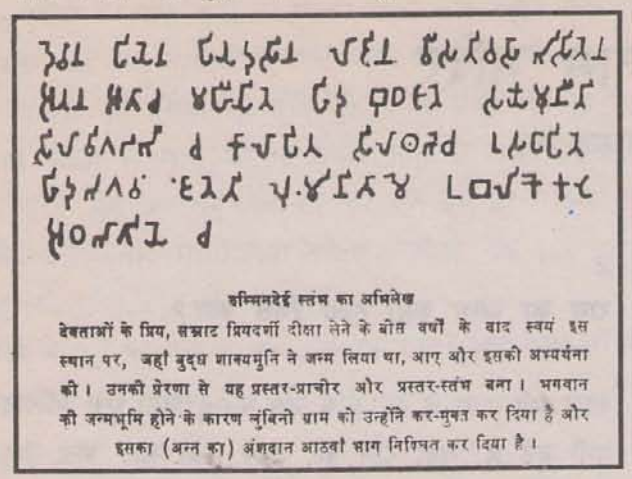

रुम्मिनदेई स्तंभ का अभिलेख

देवताओं के प्रिय, सम्राट प्रियदर्शी दीक्षा लेने के बीस वर्षों के बाद स्वयं इस स्थान पर, जहाँ बुद्ध शाक्यमुनि ने जन्म लिया था, आए और इसकी अभ्यर्थना की। उनकी प्रेरणा से यह प्रस्तर-प्राचीर और प्रस्तर-स्तंभ बना। भगवान की जन्मभूमि होने के कारण लुंबिनी ग्राम को उन्होंने कर-मुक्त कर दिया है और इसका (अन्न का) अंशदान आठवाँ भाग निश्चित कर दिया है।

गांधीजी का जन्म आज से करीब 120 वर्ष पूर्व हुआ और शुरू से यह मालूम है उनका जन्म किस स्थान पर हुआ। उस स्थान पर स्मारक बना है, और साथ ही अनेक ग्रंथों में उसका विवरण है। अतः कई सदियों के बाद भी इन सबूतों के आधार पर गांधीजी के असली जन्म स्थान का पता लगाया जा सकता है।

राम जन्मभूमि के संबंध में ऐसे कौन से अकाट्य सबूत मिलते हैं?

1826 के आसपास एक अदालत में पहली बार यह दावा किया गया कि बाबरी मस्जिद राम जन्मभूमि मंदिर को तोड़कर बनाई गई। संभवतः इससे पहले कहीं भी राम जन्मभूमि का ज़िक्र तक नहीं है। तो सवाल है - किसी व्यक्ति की मृत्यु के हज़ारों वर्ष बाद (कम से कम 2500 वर्ष बाद) किसी जगह को उसका जन्मस्थान बताया जा रहा है, हज़ारों साल के अन्तराल में कहीं भी उस जगह का जन्मस्थान होने का ज़िक्र नहीं है - तो क्या वह जगह वास्तव में राम जन्म स्थान हो सकती है?

केवल कोरे दावों के आधार पर हम किसी स्थान को राम का जन्मस्थान नहीं मान सकते। तो चलिए कुछ ऐतिहासिक सबूत की खोज करें। इतिहासकारों के लिए उत्खनन से प्राप्त जानकारी बहुत महत्व रखती है।

3

सन् 1969 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अध्यक्ष डा. बी.बी. लाल ने रामायण में ज़िक्र की गई जगहों का उत्खनन किया - आज की अयोध्या, श्रृंगवेश्पुर, भरद्वाज आश्रम, नदिग्राम आदि। इससे पहले कि हम देखें कि अयोध्या से क्या मिला, उत्खनन के बारे में, कुछ बातें जानना ज़रूरी है।

जहां भी सदियों से आबादी बसी रहती है उस जगह पर मकान नष्ट होकर गिरते रहते हैं और उनके उपर नए घर बसाये जाते हैं। इस प्रकार वहां एक टीला-सा बन जाता है। यह बात किसी भी पुराने गांव में देखी जा सकती है। अगर उन टीलों को खोदें तो वहां हम आबादी की कई परतों को देख सकते हैं। सबसे पुरानी बसाहट का अवशेष सबसे नीचे मिलेगा और उसके बाद की बस्ती उसके ऊपर होगी।

इस तरह हम बता सकते हैं कि तीसरी परत में जो चीज़ें मिलती हैं वे पहली और दूसरी परत के बाद बनीं। अगर हमें किसी भी परत से जैविक पदार्थ मिलें तो उसे खास तरीकों से जांच करके यह भी पता लगाया जा सकता है कि वह आज से कितने वर्ष पुराना है।

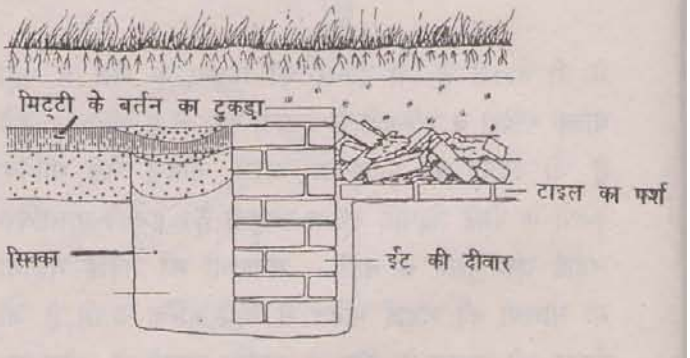

नहीं तो उस परत से प्राप्त अवशेषों से भी अनुमान लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए मान लीजिये कि एक परत में अशोक-काल के सिक्के मिलते हैं तो हम अनुमान लगा सकते हैं कि वह परत अशोक के समकालीन है।

कभी-कभी परतें ऊपर नीचे भी हो जाती हैं। मान लीजिये कि किसी ने टीले पर कुआं खोदा। कुएं में आज की कई चीज़ें नीचे गिरेंगी। अगर 100 साल में कुआं पूर जाता है तो अगर हम वहां खुदाई करें तो पायेंगे कि बीसवीं सदी की चीजें अशोक काल की चीज़ों के साथ पड़ी है। लेकिन उत्खनन में यह भी साफ पता लग जाता है।

कुएं में भर गई मिट्टी का रंग और संरचना आसपास की मिट्टी से बहुत फर्क होगा। इससे पता लगाया जा सकता है कि यह कुंआ कौन सी परत के लोगों ने खुदवाया था। अब चलिए अयोध्या का उत्खनन देखें।

4

अयोध्या में बाबरी मस्जिद के निकट उत्खनन हुआ। उत्खनन में प्राप्त सबसे निचली परत - यानि सबसे पुरानी परत ईसा पूर्व 700 से पुरानी नहीं है। उसमें एक खास किस्म के काले बर्तन के टुकड़े मिले हैं जो लगभग 600 ई.पू. के बाद बनने लगे थे। यह समय बुद्ध के समकालीन है (बुद्ध का जन्म लगभग 600 ई.पू. मे हुआ था)। इसमें दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। सबसे पुरानी परत किसी विकसित शहरी जीवन का आभास नहीं दिलाती (जैसे ईंट या पत्थर के भवन, सड़कें, तरह-तरह के कारीगरों द्वारा बनाई गयी चीज़ें आदि)। इनमें बहुत ही साधारण ग्राम्य जीवन के ही अवशेष मिलते हैं। दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि यह परत किसी भी हालत में ई.पू. 700 से पहले की नहीं मानी जा सकती।

श्रद्धालुओं का मानना है कि राम का जन्म आज से 7000 वर्ष पूर्व त्रेता युग में हुआ था. तो फिर उन्हें आज की अयोध्या, जहां आबादी ई.पू. 700 से पहले थी ही नहीं - उससे कैसे जोड़ा जा सकता है।

दरअसल आज से 7000 वर्ष पूर्व आज के अयोध्या क्षेत्र में मनुष्य थे ही नहीं। उन दिनों भारत के उत्तर-पश्चिम में कुछ जगहों में खेती हुई थी। जाहिर है कि उतने पुराने समय में जिस जगह वर्तमान अयोध्या है, रामायण में बतायी बात हो ही नहीं सकती थी।

इस कारण इतिहासकारों का मत है कि रामायण काल आज से 7000 वर्ष पूर्व नहीं हो सकता। तो सवाल उठता है कि रामायण का काल कब हो सकता है?

इसके लिए हमें समझना होगा कि किसी भी ग्रंथ में कही गई बातों से काल का निर्णय कैसे करते हैं? आमतौर पर काल निर्णय के कई तरीके हैं :

1. उस ग्रंथ में जिस तरह की सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक व्यवस्था का वर्णन है उसके आधार पर उसका काल निर्णय होता है।
2. ग्रंथ में जिस तरह की भाषा का उपयोग हुआ है, उसके आधार पर।
3. ग्रंथ में कही बातों को अन्य कौन से ग्रंथों में कहा गया है, इस आधार पर।

उदाहरण के लिए ऋगवेद को लें। इसमें ऐसे समाज का वर्णन है जो मुख्य रूप से पशुपालन करते थे और जगह-जगह घूमते रहते थे। वे कई कबीलों में बटे थे और आपस में लड़ते रहते थे। उनकी भाषा संस्कृत भाषा का एक मूल रूप था। ऋगवेद में बताये गये देवी-देवताओं के नाम ईरान के प्राचीन ग्रंथों में और मध्य-एशिया के शिलालेखों में मिलते हैं। जिस क्षेत्र का उल्लेख ऋगवेद में है (पंजाब, हरियाणा) वहां पर उत्खनन भी हुए हैं। इन सब बातों को जोड़कर यह अनुमान लगाया जाता है कि ऋगवेद की रचना का काल ई.पू. 1500 से 1200 के बीच में रहा होगा।

मगर रामायण के साथ एक बड़ी समस्या है। जिस रूप में आज हमें रामायण मिलती है वह रामायण के काल में नहीं लिखी गयी। एक मूल कहानी शायद कई गाथाओं में प्रचलित थी। समय के साथ इनमें से एक गाथा को लिखित रूप दिया गया। इस ग्रंथ में भी लगातार नई-नई बातें, नई-नई कथायें व उपकथायें अलग-अलग समय में जुड़ती गयीं। लगभग दूसरी-तीसरी शताब्दी तक इसको अंतिम रूप दिया गया जो आज वाल्मिकी रामायण के

नाम से प्रचलित है। अतः इसमें कई ऐसे विषयों का वर्णन है जो गुप्त कालीन (300-500 ई.) समाज और भौगोलिक ज्ञान का परिचय देते हैं। इनके आधार पर यह भी नहीं कहा जा सकता है कि रामायण गुप्त राजाओं के समय घटी थी। तो यह खोजना कि मूल रामायण गाथा क्या है, और वह कहानी कब घटी, बहुत ही पेचीदा मामला हो जाता है।

बड़ौदा में इसी विषय की जांच करने के लिए एक संस्था है। उन्होंने भाषा की शैली और अन्य कई बातों के आधार पर मौजूदा रामायण को अलग-अलग परतों (हिस्सों) में बांटा है - सबसे पुरानी से सबसे बाद में लिखी गयी। उदाहरण के लिए बाल-काण्ड और उत्तर-काण्ड के बारे में यह माना जाता है कि वह सबसे बाद में यानि गुप्त-काल में लिखे गये। दूसरे से लेकर छठे काण्ड के करीब 40 प्रतिशत श्लोक 500 ई.पू. से लेकर 300 ई.पू. में रचे गये। बाकी बाद में रचे गये।

मूल कथा में जिस तरह के समाज और राजनैतिक व्यवस्था का आभास मिलता है वह उत्तर वैदिक ग्रंथों (यजुर्वेद, अथर्ववेद, शतपथ ब्राह्मण आदि) में जिस समाज का वर्णन मिलता है उससे मिलता-जुलता है। उदाहरण के लिए इसमें बड़े-बड़े यज्ञों का जिक्र है जो उत्तर वैदिक काल में ही प्रचलित थे और मगध और मौर्य साम्राज्य में लुप्त होकर फिर से मौर्योत्तर काल में होने लगे।

उत्खनन और ग्रंथों के विश्लेषण से यह पता लगाया गया है कि उत्तर वैदिक समाज के लोग लगभग ईसा पूर्व 1000 से 550 के बीच में हरियाणा, पूर्वी राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश (इलाहाबाद के पश्चिम) में फैले हुए थे। वे लोग एक खास किस्म के स्लेटी रंग के मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करते थे जो उत्खनन में मिलते हैं।

तो जाहिर है कि रामायण का काल लगभग 1000 से 600 ई.पू. के बीच रहा होगा। अधिक संभावना है कि यह 700 से 600 ई.पू. के बीच घटा होगा।

अब सवाल है कि रामायण में बताई घटनायें कहां घटीं-क्या वे आज की अयोध्या में घटी होंगी। हमने ऊपर देखा था कि रामायण का समाज उत्तर वैदिक संस्कृति का अंग था। यह उत्तर वैदिक संस्कृति मुख्य रूप से इलाहाबाद के पश्चिम में फैली थी। करीब 700 से 600 ई.पू. के बीच यह संस्कृति पूर्व में भी फैली - इसका सरयू तट पर पहुंचने का विवरण शतपथ ब्राह्मण नाम के ग्रंथ में मिलता है जो कि लगभग 600 ई.पू. में रचा गया।

आज की अयोध्या में ई.पू. 700 से 600 के बीच बसाहट तो थी। मगर वह एक शहर के रूप में विकसित नहीं हुआ था। वहां से उस समय के बहुत ही साधारण ग्राम्य जीवन के अवशेष ही मिलते हैं।

अगर हम यह भी मान लें कि रामायण में अयोध्या का वर्णन बढ़ा-चढ़ा कर किया गया है और वास्तव में रामायण काल में अयोध्या एक साधारण-सा गांव ही रहा होगा- फिर भी एक समस्या है।

जिस जगह को हम आज अयोध्या के नाम से जानते हैं, वह प्राचीन बौद्ध ग्रंथों एवं पंतजली महाकाव्य में साकेत नाम से जानी जाती थी। बुद्ध खुद साकेत में कई वर्ष रहे। इन ग्रंथों में अयोध्या का कोई उल्लेख नहीं है। मूल रामायण में अयोध्या को कहीं भी साकेत नहीं कहा गया है। अतः यह संभव है कि साकेत (आज की अयोध्या) राम की अयोध्या थी ही नहीं।

साकेत और अयोध्या पर्यायवाची कब बने? यह लगभग गुप्त काल में हुआ। कालीदास के रघुवंश में दोनों को

एक ही शहर माना गया है।

तो कुल मिलाकर मामला यह है कि यह बात भी सिद्ध नहीं है कि रामायण की अयोध्या और आज की अयोध्या

एक ही हैं। अगर हम इस बात को मान भी लें तो यह कहना असंभव है कि राम का जन्म किस खास बिन्दु पर हुआ।

5

बौद्ध ग्रंथों के विश्लेषण से एक और मज़ेदार बात सामने आती है - राम कथा के अनेक पहलू उन दिनों अलग-अलग लोक कथाओं में प्रचालित थे। एक कथा एक ऐसे पितृ भक्त लड़के की है जो अपने माता पिता के लिए पानी ला रहा था तो शिकार खेलते हुए एक राजा ने गलती से उसे तीर मारकर मार डाला। आपको श्रवण कुमार और दशरथ की याद आती होगी- लेकिन यह कहानी एक जातक कथा से ली गयी है। एक और जातक कथा है - दशरथ जातक। जिसके अनुसार दशरथ बनारस का राजा था उसकी दो पत्नियां थीं। पहली के दो बच्चे थे राम और सीता और दूसरी का एक बेटा था भरत। दूसरी पत्नी चाहती थी कि भरत ही राजा बने और दशरथ ने उसकी कुत्सित योजनाओं से बचाने के लिए राम और सीता को हिमालय के वनों में भेज दिया। वे 12 वर्ष के बाद लौट आते हैं और एक दूसरे से शादी कर लेते हैं। इस कहानी में रावण का जिक्र नहीं है।

इन महाकाव्यों की महानता इस बात पर नहीं टिकी है कि वे वास्तविक घटनाओं के वर्णन हैं बल्कि इस बात पर टिकी है कि आम लोगों ने अपने तजुर्बे, अपनी समस्याओं की समझ और अपनी कल्पना से इनकी रचना की है।

इस तरह की कथाओं से हम अपनी साहित्यिक धरोहर के एक नए पहलू को पहचान सकते हैं। रामायण जैसी महागाथायें शायद किसी एक जगह घटी वास्तविक घटनाओं पर आधारित नहीं हैं। न ही वे किसी एक कवि के दिमाग की उपज हैं। शायद ये वास्तव में कई वीर पुरूषों व स्त्रियों के जीवन और उन पर रची गई गाथाओं और आम लोगों की कल्पनाओं पर आधारित हैं।

आम लोगों की लोक कथाओं में राजघरानों में सौतेली मां का दुर्व्यवहार एक बहुत बड़ी भूमिका अदा करता है, इसी तरह पत्नी का अपहरण और उसका बचाव भी, माता-पिता के प्रति पुत्र का आज्ञाकारी व्यवहार, पति के प्रति निष्ठावान स्त्री, ... आदि बातें भी लोक कथाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यही सब बातों को जोड़-जोड़कर रामायण जैसे महाकाव्य बनाये गये - यह बिल्कुल सही है कि इस काव्य का आधार इतिहास नहीं बल्कि लोगों की श्रद्धा, समझ और कल्पना है।

इन महाकाव्यों की महानता इस बात पर नहीं टिकी है कि वे वास्तविक घटनाओं के वर्णन हैं बल्कि इस बात पर टिकी है कि आम लोगों ने अपने तजुर्बे, अपनी समस्याओं की समझ और अपनी कल्पना से इनकी रचना की है।

यह समझ सब में थी और हमेशा थी केवल आज कुछ लोग एक महाकाव्य को इतिहास बनाकर उसके कार्यस्थल की खोज कर रहे हैं, उसके नाम पर लोगों के सुख-चैन को भंग कर रहे हैं।

6

इस तरह हम ऐतिहासिक विश्लेषण से इस नतीजे पर पहुंच सकते हैं कि वर्तमान अयोध्या को राम की अयोध्या कहना या फिर अयोध्या के किसी खास स्थान को राम

का जन्मस्थान कहना पूर्णतः आधारहीन है।

इसी कारण जो लोग आज राम जन्मभूमि का दावा कर रहे हैं वे यह भी कहते हैं कि हमें किसी प्रकार के सबूत या आधार की ज़रूरत नहीं है - हमारे लिए हमारा विश्वास ही काफी है। ध्यान देने योग्य है कि ये लोग जिस हिन्दुत्व की स्थापना करना चाहते हैं उसकी बुनियादी तर्क और प्रमाण नहीं बल्कि अन्धा विश्वास होगा। आईये इसी "हिन्दुत्व" का इतिहास जानें।

7

अपने देश के धार्मिक चिन्तन में हमेशा दो मुख्य धारायें रही हैं - शासक वर्गों के पाखण्डी पंडितों के आडम्बरपूर्ण संस्कारों से भरी एक धारा और इसके विपरीत और इसके विरोध में आम लोगों के साधारण धर्म की धारा। पाखण्डों के धर्म में अंधविश्वास, पंडितों को प्रधानता और सामाजिक असमानताओं पर ज़ोर था तो वैकल्पिक धर्म में तर्क, ईश्वर से मनुष्य का सीधा रिश्ता और सब मनुष्यों की समानता और आपसी प्यार पर ज़ोर था। हां, यह ज़रूर है कि हमेशा लोग इन दोनों विकल्पों के द्वंद से गुजरते रहे - किसी भी समय में लोगों के धर्म में दोनों बातें देखने को मिलती हैं - कभी एक की बातें ज़्यादा तो कभी दूसरे की बातें ज़्यादा।

उत्तर वैदिक काल में एक तरफ अश्वमेध, नरमेध, वाजपेय जैसे महायज्ञों पर आधारित ब्राह्मणों का धर्म बन रहा था तो दूसरी तरफ तर्क और आपसी प्रेम पर आधारित उपनिषद और जैन और बौद्ध मत भी फैल रहा था। मध्यकाल में बड़े-बड़े मंदिरों में ईश्वर को कैद करके पंडित धर्म का व्यापार करते थे तो उसके जवाब में भक्ति आंदोलन ने ज़ोर पकड़ा। भक्तों ने यह दावा किया कि ईश्वर का निवास स्थान तो भक्तों के हृदय में है - न मंदिरों में न तीर्थों में।

आज फिर उन्हीं मंदिरों में ईश्वर को कैद करने की साजिश रची जा रही है।

8

आखिर ये मंदिर बनवाते कौन थे और किस लिए?

भारत में व्यापक रूप से मंदिर बनवाने की परंपरा मध्यकाल में लगभग 500 ईसवीं से शुरू हुई। उससे पहले लोग ईश्वर की आराधना कैसे करते थे?

कुछ लोग सामूहिक रूप में खुले मैदानों में नाच-गान, भोजन करके ईश्वर की आराधना करते थे। कुछ विशिष्ट लोग ब्राह्मणों के सहारे बड़े-बड़े यज्ञ करके देवताओं की उपासना करते थे, कुछ और संप्रदाय के लोग इकट्ठा बैठकर अपने प्रिय देवी-देवताओं की आराधना करते थे, कुछ और लोग सड़कों पर घूमते हुए ईश्वर का गुणगान करते हुए उसकी उपासना करते थे।

ऐसे माहौल में मंदिर बनना शुरू हुए। बड़े-बड़े मंदिर बनाए जाते थे - पत्थर के। इनको बनाने में अत्यधिक धन खर्च होता था - हजारों लोग काम करते थे।

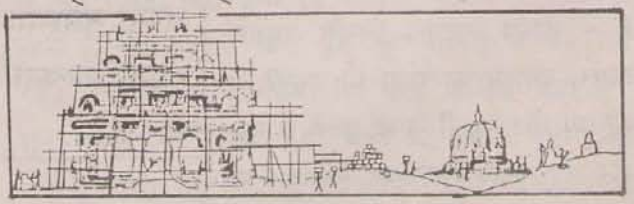

इनमें सोना-चांदी और कीमती जवाहरातों से सजी मूर्तियां रखी जातीं थीं। उनकी रोज़ बिल्कुल उसी तरह से खातिरदारी की जाती थी जैसे एक राजा की होती थी। ईश्वर के अनेकानेक पुजारी थे, नौकर-चाकर थे और

देवदासियां भी-इन्हें ईश्वर के नाम पर पुजारी भोगते थे।

इस सबका खर्चा कहां से निकलता?

राजा और अन्य धनी लोग गांवों को मंदिर के पुजारियों के हवाले करते थे-वहां के किसानों की मेहनत की उपज को पुजारी ईश्वर के नाम हड़प कर खुद भोग और विलास का जीवन व्यतीत करते थे। और हां। उन मंदिरों में आधे से अधिक मेहनतकशों (हरिजनों) को अन्दर घुसने तक नहीं दिया जाता था।

मंदिर और राजा और स्थानीय बड़े लोगों के बीच एक घनिष्ट संबंध था। ये लोग मंदिर बनवाते थे और उसे दान देते थे। मंदिरों में राजा को ईश्वर के समान और

एक ताम्रपत्र का चित्र

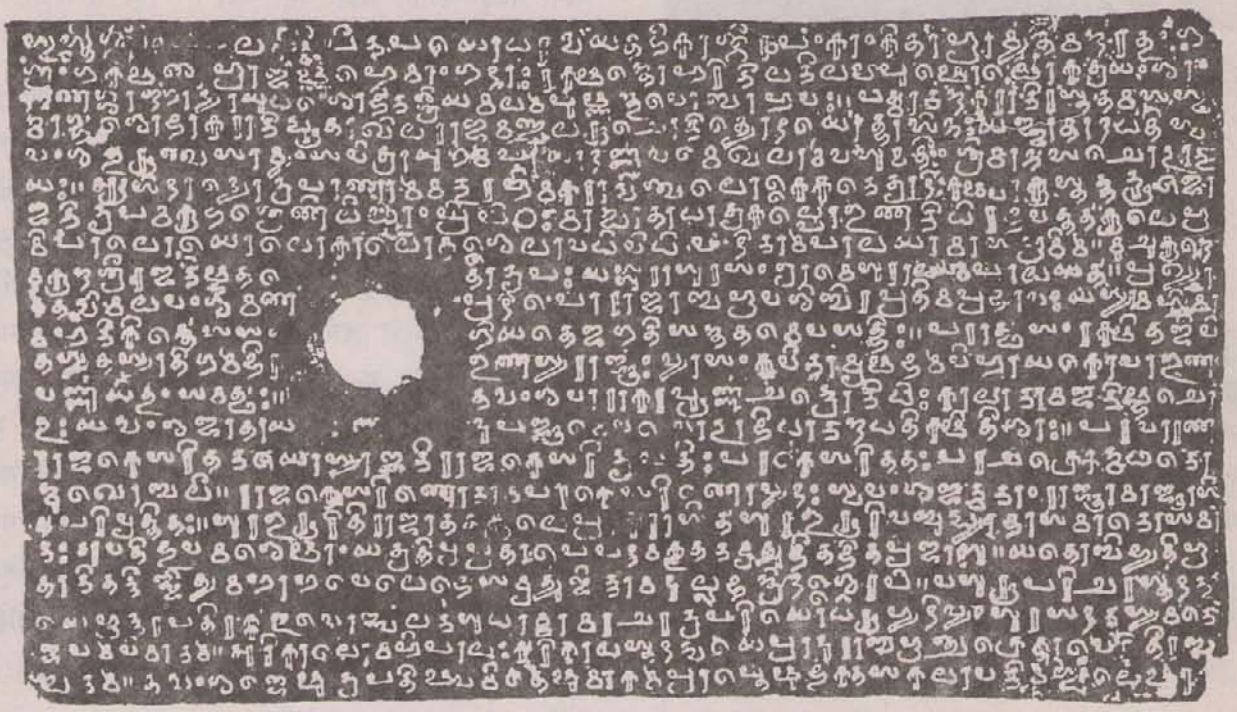

गुजरात में अलीना नाम की जगह से यह ताम्रपत्र मिला।यह सन् 766 ई. में जारी किया गया था-

"परमभट्टारक महाराजाधिराज परम माहेश्वर शीला दित्य ध्रुव भट ने महिलबलि नाम का गांव दान में दिया।यह गांव उपलहेट पाथक में बसा है और आनंदपुर के रहने वाले ब्राह्मण भट्ट आखण्डलमित्र को दान में दिया जाता है, ताकि वे बलि, चरू, वैश्वदेव, अग्निहोत्र व अतिथि सत्कार के यज्ञ कर सकें। यह दान उन्हें सब अधिकारों के साथ दिया जाता है। उन्हें गांव के किसानों से लगान लेने का हक है, उनसे बेगार करवाने का हक है, अपराधियों से जुर्माना लेने का हक है, भाग, भोग, कर, हिरण्य जैसे करों की वसूली करने का हक है। दान दिए इस गांव की तरफ कोई राजकीय अधिकारी हाथ भी नहीं उठाएगा। जब तक चांद और सूरज चमकेंगे तब तक आखण्डलमित्र और उसके वंशज इस गांव को भोग सकते हैं ..... यह दान पत्र ज्येष्ठ माह के शुक्लपक्ष की पंचमी को लिखा गया ...."

ईश्वर को राजा के समान बताया जाता था - राजा और ईश्वर दोनों का संबोधन एक था, दोनों की वेशभूषा एक सी, दोनों के प्रति व्यवहार एक सा, और बहुत-सी जगह ईश्वर का नाम भी राजा के नाम से रखा जाता था।

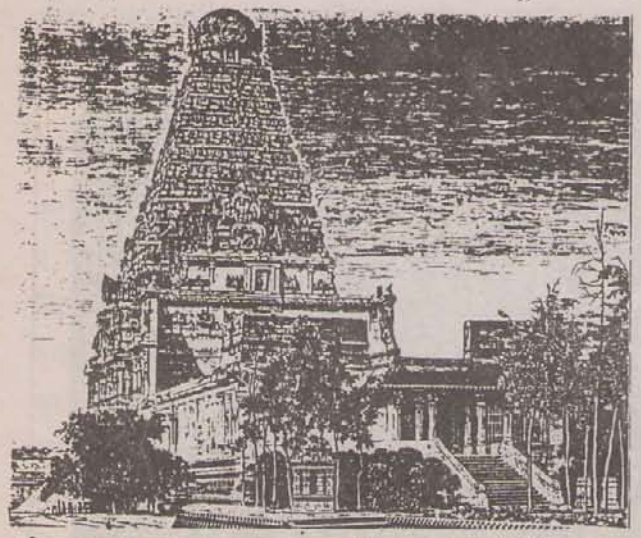

उदाहरण के लिए दक्षिण के चोल राजा राजराज ने एक बहुत ही प्रसिद्ध शिवमंदिर बनवाया - तंजावूर में और

ईश्वर का नाम रखा गया राजराजेश्वरम। उसके बेटे राजेन्द्र ने भी एक बड़ा मंदिर बनवाकर उसमें राजेन्द्र - चोलीश्वर की स्थापना की। ....
इसमें उनकी मन्शा साफ थी। मंदिर के माध्यम से राजा को मान्यता मिले।

मंदिर काफी संपत्तिवान होते थे, और मंदिर के महंत बहुत शक्तिशाली। मंदिरों में राज्य की आधी राजनीति चलती थी। इसीलिए उस समय के महत्वपूर्ण और धनी लोग मंदिरों को बनवाते थे और उनमें अपनी दखल बनाये रखते थे। मंदिर जितना धार्मिक स्थान था उससे ज़्यादा राजनैतिक केन्द्र भी था।

इन्हीं मंदिरों में गिरफ्त भगवान को छुड़ाकर भक्तों के मन में बसाने के लिए भक्ति आंदोलन शुरू हुआ। कबीर, दादू, नानक, रविदास .... जैसे भक्तगण - जनसाधारण से उठे थे। वे अपने काम के दौरान छोटे-छोटे रसीले गीत गाते थे, या फिर सड़कों पर झूमते नाचते गाते थे- यही उनकी आराधना थी।

आज ईश्वर को उन्हीं मंदिरों में वापिस कैद करने की बात चल रही है और इसके लिए आम लोगों को भड़काया जा रहा है।

9

जैसे मंदिर बने वैसे ही वे टूटे भी। एक राजा जब दूसरे राज्य पर हमला करता था तब वहां के मंदिरों को लूट लेना कोई अजीब बात नहीं थी।

शैव संप्रदाय के लोग राजा की मदद से वैष्णव मंदिर या जैन-बौद्ध मंदिरों को तोड़ते थे। उन पर अपना कब्जा जमाना भी अजूबे की बात नहीं थी। उन दिनों मंदिरों में अत्यधिक धन तो इकट्ठा होता ही था, साथ ही कई मंदिर राजा के खास मंदिर माने जाते थे और उसकी शक्ति के प्रतीक भी माने जाते थे। जब भारत में मुसलमान सुल्तान आये तब इन मंदिरों को तोड़ना उनकी अपनी शक्ति को प्रदर्शित करने का तरीका था। पुराने राजा का भगवान ही नहीं रहा तो उसे बचाने वाला भी कोई नहीं रहेगा। और फिर मंदिरों में सदियों से इकट्ठा किया गया धन जो था लूटने के लिए। इन बादशाहों के लिए हिन्दू देवता कोई पूजनीय तो थे नहीं जो वे उन्हें न तोड़ें।

10

आज जब हम मुसलमानों के मंदिर तोड़ने की प्रवृत्ति के बारे में सोचते हैं तो ऐसा लगता है कि यह एक बर्बरता-पूर्ण परंपरा है। मगर इसके पीछे एक महत्वपूर्ण धार्मिक इतिहास है।

इस्लाम धर्म जब फैलने लगा तब पूरे एशिया, खासकर मध्य-एशिया में लोग पाखण्डी संस्कार-बद्ध धर्म में जकड़े हुए थे। इसमें मठाधीशों व पुजारियों के गिरोह ने पूरे समाज को अपनी मुट्ठी में बांध रखा था। ऐसे माहौल में इस्लाम धर्म - जो एक ईश्वर, जिसकी आराधना अत्यन्त सरल और सहज तरीके से होती थी - में विश्वास रखता था, एक क्रांतिकारी ताज़ी हवा लेकर आया। इस

नये धर्म के अनुयायियों के लिए अपने साधारण धर्म के बड़प्पन को स्थापित करने के लिए पुराने धर्म के चिन्हों को विध्वंस करना ज़रूरी था।

इस धार्मिक क्रांति की वजह से पूरे मध्य-एशिया और पश्चिम-एशिया में एक नई क्रांतिकारी वैज्ञानिक विचारधारा फैली, जो कि विश्व के इतिहास के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हुई। उस समय भारत में विज्ञान लगभग खत्म हो चुका था, यूरोप में मठाधीश अपना ही विज्ञान चलाने के चक्कर में थे।

इसका यह मतलब नहीं है कि भारत में जो सुल्तान आये और मंदिर तोड़े वे किसी क्रांति करने की आशा से यहां आये। वे तो यहां अपना राज्य बनाने आये और उसके लिए जो ज़रूरी कदम थे उन्हें उठाया। शुरू में मंदिर तोड़े और बाद में ब्राह्मणों, योगियों और मुनियों से दोस्ती भी की। भारत में जो धर्म बना था वह अत्यंत जटिल था, जिसमें कई तरह की धारायें थीं - अतः यहां पर एक नये विचार के फैलने की उतनी गुंजाइश न थी जितनी अन्य जगहों पर थी।

इस कारण इस देश का इस्लामीकरण संभव न था। इस बात को सुल्तान खूब समझते थे और इसलिए उन्होंने इस दिशा में कोई खास कड़ा प्रयास नहीं किया। वे ज़रूर चाहते थे कि यहां इस्लाम धर्म फैले ताकि उनका स्थानीय समर्थन बना रहे।

मगर वे यह भी समझ गये कि स्थानीय समर्थन पाने के लिए यहां के हिन्दू ज़मींदारों से समझौता करना ज़्यादा बेहतर होगा। उन्होंने वैसा ही किया। ऐसी स्थिति में मंदिरों व दूसरे धर्मों के खिलाफ कुछ करने का कोई मतलब न था। वास्तव में देहली सल्तनत और मुगल साम्राज्य इतने लम्बे अर्से तक ज़मींदारों व सुल्तानों के बीच बने इसी समझौते के आधार पर टिके रहे।

इस बात पर कोई शक नहीं है कि सुल्तान जब एक नई जगह पर आक्रमण करते थे तो अकसर वहां के मंदिरों को तोड़ते थे। मगर सारे मंदिर जो टूटे हैं वे इसी कारण से नहीं टूटे और न ही सुल्तानों ने सारे मंदिरों को तोड़ डाला। मंदिरों का, जैसे हमने ऊपर बताया, अपने-अपने खास राजनैतिक ढांचों में एक राजनैतिक उपयोग था। जब वह राजनैतिक ढांचा खत्म हो जाता है तो उसके साथ उस मंदिर का संरक्षण करने वाले भी खत्म हो जाते हैं और इस प्रकार वह मंदिर बिना किसी संरक्षक के धीरे-धीरे जीर्ण-शीर्ण होकर खत्म हो जाता है।

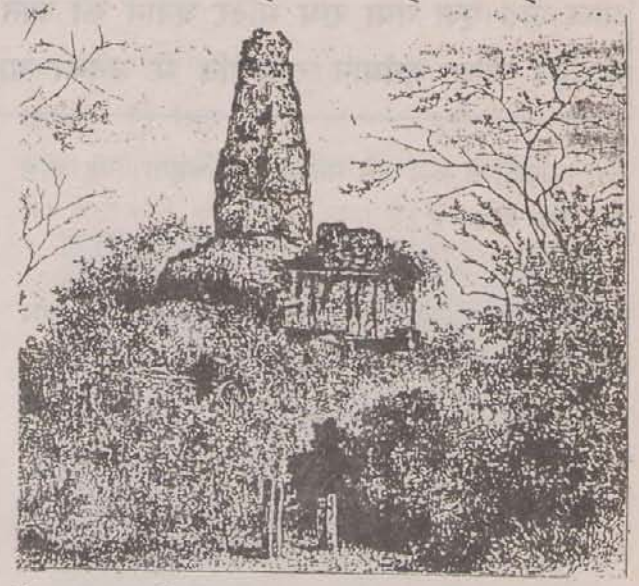

मैं यहां पर चोल साम्राज्य का उदाहरण देना चाहता हूं। तंजावूर जिला इस साम्राज्य का केन्द्र था। जब चोल साम्राज्य अपने शिखर पर था तब वहां लगभग हर गांव में बड़े-बड़े पत्थर के मंदिर बने। मगर चोल साम्राज्य के लुप्त होने के साथ-साथ इनमें से ज़्यादातर मंदिर जीर्णावस्था में पहुंचकर धीरे-धीरे टूटने लगे। इन्हें किसी ने तोड़ा नहीं। केवल इनमें लोग उसी तरह पूजा-पाठ करने नहीं पहुंचते जैसे पहले होता था। इनका जीर्णोद्धार कराने वाला कोई नहीं था। अब जो नए शासक बने (विजयनगर के) उन्होंने कुछ खास मंदिरों को चुनकर उनके द्वारा अपनी राजनीति चलाई और उन खास मंदिरों को खूब दान-दक्षिणा दी।

एक और दिलचस्प बात देखिये। बैतूल जिले में शाहपुर के पास पहावाड़ी गांव है। वहां पर शायद अफगान सुल्तानों

के समय की एक मस्जिद और मकबरा था। मगर अफगान राज्य लुप्त हो गया और उसकी जगह गोंड राजाओं का शासन बना। तब धीरे-धीरे मस्जिद का इस्तेमाल खत्म हो गया। आज वह काफी जीर्ण अवस्था में है। मगर अब पहावाड़ी में कोई उसे मस्जिद नहीं कहता। वह आज एक शिव मंदिर है!

इसी तरह उत्तर भारत में भी राजपूतों के पतन के बाद उन मंदिरों का महत्व कम होता गया जो पहले उनकी राजनीति से जुड़े हुए थे। इस कारण उनका धीरे-धीरे टूट जाना स्वाभाविक था। उत्तर भारत में तुर्कों के आने के बाद कई मंदिरों के खत्म होने का यह उतना ही महत्वपूर्ण कारण था जितना तुर्कों द्वारा मंदिर तोड़ना। इस बात को कौन नकार सकता है कि अब जो राम जन्म भूमि के नाम पर मंदिर बनेगा उसका वर्तमान राजनीति से गहरा संबंध है और जब यह राजनीति बदल जायेगी तो उस मंदिर का महत्व भी बदल जायेगा। आज जब एक नया राम मंदिर बनाने की बात चल रही है, अनेकों ऐसे राम मंदिर जीर्ण होकर टूट रहे हैं। मगर वर्तमान राजनीति में उनका महत्व नहीं है तो उन्हें पूछने वाले भी नहीं हैं।

11

अब हम आते हैं बाबरी मस्जिद, राम जन्मभूमि विवाद पर। यह सब मानते हैं कि वहां एक मस्जिद पिछले 400 वर्षों से है। अब विश्व हिन्दू परिषद् का दावा है कि वह मस्जिद राम जन्मभूमि मंदिर को तोड़कर बनाई गई। अतः इसे हिन्दुओं को वापस कर देना चाहिए ताकि वे इस जगह एक मंदिर बना सकें।

ऊपर हमने देखा कि ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह कहना कि राम का जन्म किस विशिष्ट स्थान पर हुआ संभव नहीं है। फिर भी यह तो संभव है कि जहां बाबरी मस्जिद है वहां पहले एक मंदिर रहा हो। उसे तोड़कर मस्जिद बनायी गई हो।

तो चलिए इस दावे के पीछे जो तर्क हैं उन्हें खोजें। हमारी पहली समस्या यह है कि इतिहास की किसी भी पुस्तक या शिलालेख में किसी राम जन्म भूमि मंदिर का उल्लेख नहीं मिलता है।

सबसे पहले हम ठोस प्रमाण खोजेंगे और उसके बाद ही किवदंतियों की तरफ चलेंगे। ठोस प्रमाण दो प्रकार के हो सकते हैं - कुछ समकालीन लिखित प्रमाण कि बाबर की सेना ने अयोध्या में एक मंदिर को तोड़कर मस्जिद बनाई। दूसरा ठोस प्रमाण होगा - मस्जिद की आकृति और वास्तु-कला।

बाबर के काल से हमें कई पुस्तकें मिलती हैं जिनके आधार पर हम बाबर के जीवन के बारे में जान सकते हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक है बाबर की अपने हाथ की लिखी गयी आत्मकथा जिसे बाबर-नामा या तुजुक-ए-बाबरी कहते हैं। यह एक तरह से बाबर की डायरी और आत्मकथा थी। मगर इस पुस्तक में बाबर ने कहीं यह नहीं लिखा है कि उसने अयोध्या में एक मंदिर को तुड़वाकर मस्जिद बनाई या फिर ऐसा कोई आदेश दिया। अगर वह मंदिर तुड़वाकर मस्जिद बनवाता तो ऐसा काम वह धार्मिक यश

इस बात को कौन नकार सकता है कि अब जो राम जन्म भूमि के नाम पर मंदिर बनेगा उसका वर्तमान राजनीति से गहरा संबंध है और जब यह राजनीति बदल जायेगी तो उस मंदिर का महत्व भी बदल जायेगा।

आज जब एक नया राम मंदिर बनाने की बात चल रही है, अनेकों राम मंदिर जीर्ण होकर टूट रहे हैं। मगर वर्तमान राजनीति में उनका महत्व नहीं है तो उन्हें पूछने वाले भी नहीं हैं।

कमाने के लिए करता-तो फिर वह इस बात को छिपाता नहीं बल्कि ज़ोर से उजागर करता। मगर बाबर नामा में ऐसा कोई जिक्र नहीं है। किन्तु बाबर नामा की डायरी के कुछ पन्ने गायब हैं। खासकर कुछ पन्ने जिनमें उसके अयोध्या जाने का विवरण रहा होगा।

अतः यह कहा जा सकता है कि बाबर ने मंदिर तोड़ने की बात लिखी थी और वे पन्ने नष्ट हो गये हैं। मगर समस्या यह है कि उस समय की या बाद में लिखी गई किसी भी पुस्तक में इस बात का उल्लेख नहीं है। तो हमें पता ही कैसे चलता है कि बाबरी मस्जिद बाबर के आदेश से बनी है?

बाबरी मस्जिद में दो शिलालेख हैं, उनमें से एक इस मस्जिद के बनने का विवरण देता है। आलेख इस प्रकार है-

> **"शाह बाबर के आदेशानुसार जिसका न्याय एक ऐसी इमारत है जो आकाश की ऊंचाई तक पहुंचती है। निर्माण कराया इस फरिश्तों के उतरने के स्थान का, सौभाग्यशाली अमीर, मीर बाकी ने बवद खैरे बाकी (965 हिजरी) जो उसके निर्माण का वर्ष है। यह स्पष्ट हो गया जो मैं कहूं कि यह सदाचार अनंत तक रहे।"**

इसमें केवल यह कहा गया है कि बाबर के आदेश से उसके अमीर (सेनापति) मीर बाकी में 965 हिजरी (यानि 1528 ईसवी) में यह इमारत बनाई। इसमें किसी मंदिर को तोड़ने की बात नहीं है। अतः जहां तक समकालीन लिखित प्रमाणों का सवाल है, उनसे यह तो साबित नहीं होता कि बाबर ने मंदिर तोड़कर मस्जिद बनवाई। लेकिन एक और दलील दी जा सकती है। अगर बाबर आमतौर पर मंदिर तोड़कर मस्जिद बनवाता था तो शायद स्वाभाविक रूप से अयोध्या का भी मंदिर तोड़ा होगा और उसने इस बात का उल्लेख करना महत्वपूर्ण नहीं समझा होगा। लेकिन ऐसा न था।

बाबर के पूरे इतिहास में इस तरह से मंदिर तोड़ने की कोई मिसाल नहीं मिलती। केवल एक मौके पर उसने चट्टान पर तराशी गयी दिगम्बर जैन मूर्ति को तोड़ने का आदेश दिया क्योंकि वह मूर्ति उसे बहुत अश्लील लगी। मगर वह कई मंदिरों को देखने गया और उसने उनकी वास्तुकला का अध्ययन भी किया। इनका वर्णन उसके बाबर-नामा में मिलता है। इन वर्णनों में कहीं भी धर्मान्धता का परिचय नहीं मिलता।

बाबर के मरने के करीब 30 वर्ष बाद उसके जीवन से संबधित कई चित्र बनाये गये और उन्हें बाबरनामा में जोड़ा गया। इनमें से एक चित्र में बाबर को हिन्दू मंदिरों का दौरा करते हुए दिखाया गया है। चित्र में कई हिन्दू

संत बाबर का स्वागत कर रहे हैं और अन्य अपने-अपने काम में लगे हैं। किसी के चेहरे पर एक आक्रमणकारी मूर्ति-भंजक से भयभीत होने का अन्दाज़ भी नहीं दिखता।

विश्व हिन्दू परिषद् एक मनगढ़ंत कहानी फैला रही है कि बाबर से एक मुसलमान संत मिला जिसने बाबर को आदेश दिया कि वह राम-जन्मभूमि को तोड़कर मस्जिद बनवाये। और इसके अनुसार ही बाबर ने ऐसा किया। यहां इस बात को साफ करना जरूरी है कि उपरोक्त कथन बिल्कुल ही निराधार है।

12

अगर हम उस समय की राजनैतिक स्थिति को देखें तब भी मंदिर तोड़ने वाली बात की संभावना कम ही लगती है। अगर बाबर हिन्दू राजाओं से उस समय लड़ रहा था तो मंदिर तोड़ना स्वाभाविक लगेगा। लेकिन उस समय अयोध्या में वह अफगान सरदारों से लड़ने गया था। अफगानों से लड़ने वाला एक बादशाह हिन्दुओं के मंदिर तोड़कर क्या जता सकता है और फिर उस समय हिन्दुओं से मुसीबत मोल लेना भी उसके लिए सही नहीं होगा।

राम जन्मभूमि जैसा महत्वपूर्ण मंदिर अगर तोड़ा जाता तो उसका असर दूर-दूर तक और काफी लम्बे अर्से तक रहना चाहिए। लेकिन आश्चर्य की बात तो यह है कि स्वयं तुलसीदास जिन्होंने अयोध्या में ही बाबरी मस्जिद के बनने के 46 वर्ष बाद अपनी रामचरित मानस को लिखना प्रारंभ किया था, उन्होंने राम जन्म भूमि मंदिर के होने या उसे तोड़ने की बात भी नहीं की है।

इन सब बातों से हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि बाबरी मस्जिद किसी राम जन्मभूमि मंदिर को तोड़कर नहीं बनाई गई। मगर यह बात तो सच है कि बाबरी मस्जिद में 12 ऐसे खम्बे उपयोग किये गये हैं जो किसी प्राचीन मंदिर या महल के रहे होंगे।

पुरानी इमारतों के खम्भों व पत्थरों को नई इमारतों में उपयोग करना कोई आश्चर्यजनक बात तो नहीं है। उस समय तराशे हुए पत्थरों व खंभों की खूब मांग थी और जब वे कहीं आसानी से उपलब्ध हो जायें तो उनका उपयोग स्वाभाविक था। नये मंदिरों में पुराने मंदिर के खंभों का उपयोग, घरों में मंदिरों के पत्थरों का उपयोग या फिर तालाबों और बांधों में मंदिरों के पत्थरों का उपयोग करना आम बात थी। याद रखिये कि अयोध्या गंगा-यमुना मैदान में है जहां पत्थर काफी दूर से मंगवाना पड़ता था। अतः किसी भी इमारत बनाने वाले को खंभे पड़े हुए मिलें तो वह उनका उपयोग स्वाभाविक रूप से करेगा ही।

डा. बी. बी. लाल ने बाबरी मस्जिद (कथित राम जन्म भूमि) के ठीक पीछे उत्खनन कार्य किया था। अगर वहां मध्यकाल में कोई मंदिर बनाया गया होता तो उसके अवशेष वहां ज़रूर मिलते। पर डा. बी.बी. लाल के उत्खनन की रिपोर्ट में यह साफ लिखा है कि जन्म भूमि माने जाने वाले इलाके में मध्यकाल से चूने, ईट व कंकड़ के फर्श के अलावा उल्लेख करने लायक और कुछ नहीं मिलता। विश्व-हिन्दु परिषद् का समर्थन कर रहे कुछ इतिहासकारों का दावा है कि उक्त उत्खनन में बाबरी मस्जिद में लगे खंभों के नाप से मिलते जुलते नाप की पक्की नीवें मिलती हैं। किन्तु स्वयं बी.बी. लाल की रिपोर्ट से इस दावे की रत्ती भर भी पुष्टि नहीं होती।

लेकिन क्या हम इसके आधार पर और कोई सबूत के बिना इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि बाबरी मस्जिद एक मंदिर को तोड़कर बनायी गयी थी और वह मंदिर उसी स्थान पर था जहां मस्जिद है? अगर हां तो हमें उन हजारों घरों, पुलों, तालाबों व मंदिरों जिनमें पुरानेमंदिरों के खंभें या पत्थर लगे हैं, उन के बारे में भी यही कहना होगा कि वे सब मंदिरों को तोड़कर बनाये गये।

13

अगर यह सही लगता है कि अयोध्या में मंदिर तोड़कर मस्जिद बनाने की बात के लिए पर्याप्त आधार नहीं हैं और इसका उल्लेख किसी मुगलकाल के ग्रंथ या दस्तावेज में नहीं है तो फिर सवाल उठता है कि आखिर यह विवाद शुरू कैसे हुआ?

इसके लिए हमें ज़रा-सा अयोध्या के इतिहास में जाना होगा।

मौर्य काल और गुप्त काल में अयोध्या एक महत्वपूर्ण बौद्ध तीर्थ था। यहां अनेकों बड़े स्तूप थे। कुछ इतिहासकारों का यह भी कहना है कि बाबरी मस्जिद एक बौद्ध स्तूप के अवशेष के ऊपर बनी है। साकेत में कुछ तीर्थकरों का भी जन्म हुआ इसलिए कई जैन मठालय व मंदिर भी रहे होंगे। इस के साथ ब्राह्मणों ने भी अयोध्या को एक मोक्षपुरी माना और सात तीर्थ स्थानों में से अयोध्या को एक बताया। गुप्त काल में अयोध्या और साकेत को एक ही माना गया तो "हिन्दुओं" के लिए भी आज की अयोध्या एक प्रमुख तीर्थस्थान बना।

अतः अयोध्या में तरह-तरह के धर्मों के साधु-संत-पंडित रहते थे। उनका आपस में रिश्ता कैसा रहा होगा यह कहना संभव नहीं है। जो भी रहा हो समय के साथ बौद्ध स्तूप व मठालय खत्म हो गये। गुप्त काल या दसवीं शताब्दी तक अयोध्या में राम पूजा प्रमुख नहीं था। ध्यान देने योग्य है कि अयोध्या की खुदाई में राम की खंडित या साबुत मूर्तियां मिली ही नहीं हैं। हालाकिं दूसरे प्रदेशों से हमें राम और रामायण से संबधित मूर्तियां मिलती हैं। बाबरी मस्जिद के पीछे हुई खुदाई से एक प्राचीन जैन मूर्ति मात्र मिली। उस समय वैष्णव संप्रदाय में भी राम की तुलना में कृष्ण वासुदेव की आराधना प्रमुख रही।

वास्तव में राम भक्ति की परंपरा दक्षिण भारत के भक्ति आंदोलन से जोर पकड़ी। वहीं रामायण का रूपांतरण तमिल भाषा में हुआ। वहीं से रामानुज के परम शिष्य रामानन्द उत्तर की ओर आये और रामानन्दी संप्रदाय की स्थापना लगभग 14वीं शताब्दी में की। इस संप्रदाय के साधु संत मुगल काल में अयोध्या में बसने लगे। संत तुलसीदास भी शायद इसी संप्रदाय के थे और उन्होने राम कथा और राम भक्ति को जन-साधारण तक फैलाने के लिए लोगों की बोली में रामचरित मानस की रचना की।

सत्रहवीं और अठाहरवीं शताब्दी में रामचरित मानस अत्यंत लोकप्रिय हुआ और रामचरित मानस पाठ राम-भक्ति का एक प्रमुख तरीका बना। राम-भक्ति के फैलने के पीछे यह महत्वपूर्ण कारण रहा होगा कि इसमें आडंबरपूर्ण और खर्चीले संस्कार या मंदिर जाकर पूजा-पाठ करने की प्रथा नहीं थी। सब अपने-अपने घर में मानस-पाठ कर सकते और सुलभ तरीके से राम की पूजा कर सकते थे।

जैसे-जैसे राम भक्ति फैलने लगी वैसे-वैसे अयोध्या का महत्व भी बढ़ने लगा। अयोध्या में तीर्थ करने वालों की संख्या बढ़ती गई। यह सब सन् 1600-1800 ई. की बातें हैं। रामा-नंदी साधु और उनके मठालय भी महत्वपूर्ण और शक्तिशाली बनते गये। उन्होंने हनुमान-गढ़ी जैसे अनेक मंदिर बनाये। इसके लिए उन्हें अवध के नवाबों से काफी सहायता और दान-अनुदान मिला।

अयोध्या में रामानन्दियों के बढ़े प्रभाव से वहां के मुसलमान-मौलवी परेशान होने लगे। उन्हें लगता था कि नवाब से अनुदान उन्हें मिलना चाहिए। इस कारण मौलवियों और रामानन्दी संतों के बीच समय-समय पर झगड़ा छिड़ जाता। दान-अनुदान के लिए और अपनी धाक जमाने के लिए अन्य धार्मिक संप्रदायों के बीच झगड़ा होता था। ऐसे झगड़े इतिहास में पहले भी होते रहे हैं और आज भी हो रहे हैं।

बस इसी तरह शुरू हुआ बाबरी मस्जिद का झगड़ा। 1855 में अयोध्या के कुछ मौलवियों ने दावा किया कि हनुमान गढ़ी का मन्दिर पहले मस्जिद था और इसे मुसलमानों को लौटाना चाहिए। मौलवी इस उद्देश्य से मुसलमानों का एक समूह लेकर हनुमान गढ़ी की ओर जाने को तैयार हुए। रास्ते में बाबरी मस्जिद में सब लोग ठहरे। उधर महन्तों के नेतृत्व में कई हिन्दू ज़मींदार व अन्य लोग इकट्ठा हुए और उन्होंने बाबरी मस्जिद पर धावा बोल कर वहां ठहरे हुए मुसलमानों को मौत के घाट उतार दिया।

इस घटना से अवध के मुसलमान लोग बहुत परेशान हुए। वे चाहते थे कि दोषी हिन्दुओं को नवाब दंड दे। पर नवाब बड़े पशोपेश में फंस गया। अंग्रेज सरकार के प्रतिनिधि साफ कह रहे थे कि हिन्दुओं के खिलाफ कदम न उठाए जाएं नहीं तो भीषण दंगा फसाद हो जाएगा। नवाब अंग्रेजों के खिलाफ नहीं जा सकता था। आखिर में उसने मौलवियों और उनके समर्थकों को सेना भेज कर दबाया ताकि उसके राज्य में हिन्दुओं के खिलाफ कोई कार्यवाही न हो।

इस संदर्भ में किसी समय महन्तों की तरफ से यह दावा किया गया कि बाबरी मस्जिद पर भी उनका हक होना चाहिए क्योंकि अयोध्या में यह जगह ही राम की जन्मभूमि है। यह दावा शायद ही पहले कभी सुनने में आया हो। 1856 में अंग्रेज़ों ने नवाब पर आरोप लगाया कि वह राज्य में व्यवस्था और शान्ति बनाने के काबिल नहीं है। इस लिए अंग्रेज़ यह उचित समझते हैं कि अवध का राज्य अपने अधीन कर लें और नवाब को हटा दें। 1857 में अंग्रेज़ों के विरूद्ध भारत भर में विद्रोह भड़का और अवध में इस विद्रोह के दौरान अयोध्या के महन्तों ने अंग्रेज अफसरों को संरक्षण दिया।
जब अंग्रेजों ने 1857 की क्राति दबा दी तब उन्होंने विद्रोहियों को निर्मम दण्ड और समर्थकों को पुरस्कृत किया।

अयोध्या के महन्त के दावे को मानते हुए अंग्रेज़ सरकार ने बाबरी मस्जिद के सामने की नजूल ज़मीन महन्तों को दे दी। इससे महन्तों का मनोबल बढ़ गया। वे मांग करने लगे कि इस ज़मीन पर राम जन्म के स्मरण में चबूतरा बनाया जाए। लोग इस राम चबूतरे पर पूजा करने आने लगे।मस्जिद के ठीक सामने होने की वजह से कहीं लड़ाई न हो, इसलिए दोनों के बीच एक रेलिंग लगा दी गई।

इतने सब के बाद महन्त यह मांगने लगे कि चबूतरे पर मन्दिर बनाया जाना चाहिए। इस बिन्दु पर अंग्रेज़ जज को लगा कि चाहे महन्त की बात सच हो पर फिर भी मस्जिद के ठीक सामने ऐसा मन्दिर नहीं बनने दिया जा सकता- इससे शान्ति भंग होने का डर है। जज ने मन्दिर बनाने की अनुमति नहीं दी। महन्त सालों तक कचहरी में यह कोशिश करते रहे कि उन्हें चबूतरे पर मन्दिर बनाने की अनुमति मिल जाए पर सफल नहीं हुए। ध्यान देने योग्य बात यह है कि समस्त अंग्रेज़ काल में महन्तों का दावा मस्जिद के सामने बने चबूतरे पर था, मस्जिद के अन्दर की जगह पर नहीं।

राम मन्दिर का दावा मस्जिद के अन्दर कैसे आ गया यह स्वतन्त्रता के बाद की घटनाओं से स्पष्ट होता है।

सी. एन. सुब्रम्हण्यम

(स्वतंत्रता के बाद की घटनाओं का ज़िक्र इसी अंक में ए. जी. नूरानी के लेख में किया गया है - सम्पादक)

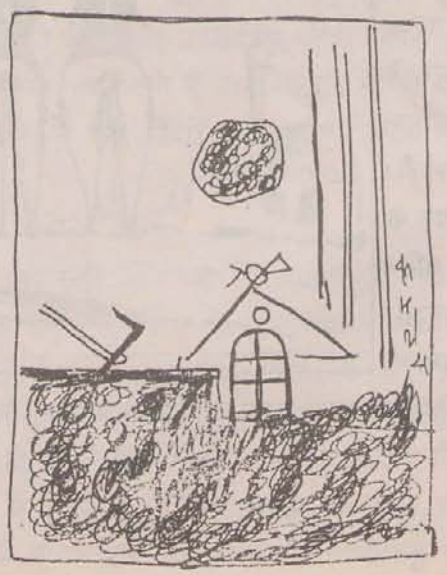

शहीद बलदेवसिंह मान का खत

अपनी नवजात बेटी के नाम

बलदेवसिंह मान 26 सितम्बर, 1986 को खालिस्तानी आतंकवादियों की हिंसा के उस समय शिकार हुए, जब वे अपने गांव चिन्ना बग्गा (जिला अमृतसर) जा रहे थे. काली ताकतों के खिलाफ सक्रिय बलदेवसिंह मान ने अपनी शहादत से एक सप्ताह पूर्व जन्मी अपनी नवजात पुत्री को यह खत लिखा. यह खत राजनैतिक साजिशों और स्त्रियों की स्थिति पर एक सामाजिक दस्तावेज है.

तेरा स्वागत है, मेरी प्यारी बच्ची! आज ही तुम्हारे जन्म का समाचार तुम्हारी दादी से 18 तारीख (सितम्बर, 1986) को प्राप्त हुआ. तुम्हारी दादी ने यह समाचार उतनी प्रसन्नता से नहीं बताया जितनी प्रसन्नता से यह समाचार उसने तुम्हारे स्थान पर लड़के के जन्म की स्थिति में मुझे देना था. क्योंकि तुम एक लड़की हो, इसलिए तुम्हारे जन्म से घर का माहौल इतना खुशगवार नहीं हुआ.

उपेक्षित ढंग से तुम्हारी ताइयों ने यह कहा, "अच्छा! गुड्डी आ गई?" जैसे कि शायद इस प्रकार कुदरत ने मेरे साथ कोई बहुत बड़ा अन्याय किया हो. इस तरह के माहौल में तुम्हारे आगमन के बारे में मुझसे पूछा जा रहा है. तेरे ताउओं ने इस पर कोई आज मेरे साथ टिप्पणी नहीं की. शायद वे इस बारे में कुछ भी न कहना बेहतर समझते हैं. कुछ कामरेड दोस्त जो मेरी विचारधारा से अवगत हैं, या इस प्रकार कह लो कि मेरी विचारधारा के साथी हैं तेरे जन्म की खुशी की बधाई देंगे और मुझसे तेरे जन्म की खुशी में पार्टी लेने के लिए कहेंगे.

तेरी दादी ने तेरे मानकों (ननिहाल) की ओर से भेजे गये बधाई के पत्रों पर भी आश्चर्य व्यक्त किया है तथा हैरानी भरे लहजे में ही पूछा है कि "लड़कियों की काहे की बधाई होती है." उसे यह गम है कि पुत्र "बढ़ा" नहीं वह तभी बढ़ता यदि उसके घर पुत्र ने जन्म लिया होता. मेरी बच्ची, मुझे इस सब पर कोई हैरानी नहीं हुई और अत्यन्त गहराई के साथ इस बारे में ज्ञान है कि वर्तमान सामाजिक प्रणाली में लड़की एक बोझ समझी जाती है, ऋण या भार समझी जाती है. मैंने इस विषय पर बहुत कुछ पढ़ा है और सुना है. और आज मैं व्यावहारिक रूप में अपने इसी अनुभव तथा अनुभूतियों का एहसास कर रहा हूं. इससे बड़ा गम शायद तेरी दादी को इस कारण भी हो सकता है क्योंकि मैं उसकी नज़रों में एक बेकमाऊ तथा बेकार हूं और शायद निकम्मा भी. इसलिए तुझे किसी कमाऊ और रोजगार में लगे पिता की बेटी बनना था.

चलो, इस समाज का व्यवहार सदियों से ऐसा ही चलता आ रहा है. औरत की गुलामी का यह सिलसिला जागीरदारी तथा पूंजीवादी व्यवस्था की भी पैदावार है.

मेरी बच्ची, तेरा पिता न ही निकम्मा और न ही बेकमाऊ है. वह इस समाज को बदलने की एक लड़ाई लड़ रहा है जिस समाज में तेरा जन्म एक खुशी भरी खबर नहीं, बल्कि एक दुख भरी घटना माना जाता है. इसमें शक नहीं कि बहुत से प्रगतिशील विचारों के लोग, जो समाज के लिए पथ-प्रदर्शक तथा नायक के रूप में पेश आते रहे, व्यावहारिक जीवन में उन्होंने अपनी बेटियों के साथ वही व्यवहार किया जो घोर प्रतिक्रियावादी लोग किया करते हैं. लेकिन मैंने अपने जीवन को हमेशा ही इस तरह जीने का प्रण किया है कि जिसकी कथनी और करनी में कोई फर्क न आये.

प्यारी बच्ची, मेरे जीवन का उद्देश्य और मेरे द्वारा लड़ी जा रही जंग शायद तुझे बहुत ही देर से बड़ी होने पर समझ आये. शायद तेरी मां को मैं आज तक नहीं समझा सका कि मेरे जीवन का समय, जो उसकी नज़रों में भी नष्ट किया जा रहा है, कितने महान आदर्श की पूर्ति के लिए लगाया जा रहा है. मैं एक ऐसे समाज की रचना के लिए लड़ाई लड़ रहा हूं जिसमें मानव के गले पड़ी गुलामी की जंजीरें टूटकर चकनाचूर हो जायें, दबे-कुचले लोगों को इस धरती पर स्वर्ग प्राप्त हो सके. भूख से मर रहे बच्चे, शरीर बेचकर पेट भरती औरतें, खून बेचकर

रोटी खाते मजदूर, ऋण की गठरियों तले पिसते किसान, इन सबकी मुक्ति के लिए जंग लड़ी जा रही है जिसमें तेरा पिता अपना विनम्र योगदान कर रहा है.

जिस समय तुमने जन्म लिया है, पंजाब की धरती सांप्रदायिक आधार पर बंटी पड़ी है. कहीं इसलिए लोग मारे जा रहे हैं क्योंकि उनके सिरों पर केश नहीं हैं, उधर इस कारण जिन्दा जलाये जा रहे हैं क्योंकि उनके सिरों पर केश हैं. धर्म के नाम पर मानवता की हत्या की जा रही है. लोगों को विभाजित करके; खून की होली खेलने में लगाकर, शैतान दूर बैठे हंस रहे हैं. मेरी बच्ची, जहां तुमने जन्म लिया है, तेरा पिता इन काली ताकतों के खिलाफ संघर्ष में व्यस्त है. काली ताकतें इस धरती से प्रकाश को ओझल कर देना चाहती हैं. रोशनी बांटने वाले सूर्यों का अन्त करना इनकी साजिश है.

मेरी बच्ची। इन साजिशों के विरूद्ध जंग करना, शहादत देना अत्यन्त आवश्यक है. मैं दावे के साथ नहीं कह सकता कि मैं भी किरणें बांटता हुआ इनके हाथों शहीद नहीं हो सकता. कुछ भी हो मेरी बच्ची, तुझे हमेशा अपने जीवन में इस बात पर गर्व होगा कि तुम एक ऐसे पिता की बेटी हो, जिसने अंधेरों के विरुद्ध जंग लड़ी थी. शायद तेरी ज़िन्दगी में मैं तुझे वह सुविधाएं न दे सकूं और न ही वह जिम्मेदारियां पूरी कर सकूं जो एक पिता को बच्चों के लिए करनी चाहिए. लेकिन मेरे सिद्धांत की विरासत तेरे लिए सबसे अनमोल होगी. तुम एक ऐसे दीपक से उत्पन्न ज्योति हो जिसे प्रकाश बांटना है. देखना, कहीं ऐसे शैतानों से गुमराह न हो जाना जो मानवता की झोंपड़ियां जला देने की साजिशें रचते हैं.

युद्ध, मेरे लोगों का युद्ध, अवश्य जीता जाना है. शायद तुझे वह काले पहर ना ही नसीब हों जिनमें से अभी मेरे लोग गुज़र रहे हैं. बलिदानों के सिरे बीज कर हम यहां एक ऐसे चमन की रचना कर लें जिसमें तुम आज़ादी की हवा खा सको. यदि हम इस जंग को जीत न भी सके, तो मेरी बच्ची, तुम उस सच के लिए लड़ रहे काफिले की नायक बनने की कोशिशें अवश्य करना. मैं कभी नहीं चाहूंगा कि तुम सिख बनो, हिन्दु या मुसलमान. इस सबसे ऊपर उठकर इंसान बनने की अवश्य कोशिशें करना. देखना, कहीं इन बंटवारों में तुम्हारी इंसानियत न बंट जाये.

मेरी प्यारी बच्ची, यह कुछ शब्द लेकर तेरे जन्म पर मैं तुझसे सम्बोधित हुआ हूं. आशा है स्वीकार करोगी और इस पर अमल भी करोगी. यह कुछ शब्द तेरी ज़िन्दगी की बुनियाद है, इस पर अपनी ज़िन्दगी के महल का निर्माण कर लेना.

लोक जंग का सिपाही,

तेरा पिता

दंगा

"हिंदु और मुसलमान दोनों भाई-भाई हैं। और एक-दूसरे को देश भाई कहते हैं। देश भाई जब स्नेह की उमंग में आकर एक-दूसरे के साथ खेलते हैं, तो दंगा हो जाता है। दंगा बड़े मज़े का खेल है और यह हिंदुस्तान में अक्सर खेला जाता रहा है। क्योकि यहां हिंदु और मुसलमान बहुत संख्या में रहते हैं। आम तौर पर दंगा पंडित और मौलवी से शुरू होकर दफा 144 पर जाकर समाप्त हो जाता है। इस दौरान खून की नदियां बहती हैं, जिनमें हिंदु और मुसलमान बड़ी खुशी से नहाते हैं। इसके बाद पुलिस स्थिति पर काबू पा लेती है। और फिर दूसरे दंगे की तैयारियां शुरू हो जाती हैं। बड़े मज़े का खेल है यह। और चूंकि हिंदु-मुसलमानों को भी इस खेल से फुरसत नहीं मिली, इसलिए उन्होंने यह काम बहुत देर तक अंग्रज़ों को सौंप रखा कि वे हमेशा इन दोनों भाईयों के बीच न्याय करते रहें। यही कारण है कि अंग्रेज़ों को दंगा-न्यायशील कहा जाता है। और हिंदु-मुसलमानों को दंगाशील और जो लोग दंगाशील नहीं उन्हें प्रगतिशील कहा जाता है। लेकिन देश में ऐसे मूर्खों की संख्या थोड़ी है।"

कृष्ण चंदर

('सामाजिक सद्भावना' अंक 386 अगस्त 85 से)

बाबरी मस्जिद - रामजन्म भूमि सवाल

बाबरी मस्जिद - रामजन्म भूमि विवाद दरअसल कोई विवाद न बना होता यदि "फूट डालो राज करो" की साम्राज्यवादी नीति को देशी शासकों ने भी न अपनाया होता। किन्तु हमारे देश के शीर्षस्थ राजनेताओं ने सांप्रदायिक तत्वों को हवा दी, समस्याओं पर से ध्यान बटाने के लिए ऐसे शगूफे छोड़े जिनसे माहौल का तनाव बढ़ता गया। चुनाव में भी सांप्रदायिक नारों-भाषणों-आश्वासनों पर वोट बटोरे गए।

आज़ादी के बाद से राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद के मुद्दे ने देश के सांप्रदायिक माहौल में सबसे ज़्यादा ज़हर घोला है। इसके ही चलते जान-माल का भारी नुकसान हुआ है और आगे चलकर और भी खतरे की आशंका है। हमारी धर्मनिरपेक्षता ही दांव पर नहीं लगी है बल्कि कानून कायदों और बुनियादी मानवीय शालीनता के प्रति हमारा संकल्प दांव पर लगा है। यहां यह कहना ज़रूरी है कि पूरे मसले में एक न्यायपूर्ण समझौते के लिए काफी गुंजाइश मौजूद है।

विश्व हिन्दू परिषद (वि.हि.प.) का दावा बेबुनियाद व मनगढ़न्त इतिहास, अदालतों में विकृतिपूर्ण न्यायिक प्रक्रिया और ज़ोर-ज़बर्दस्ती की राजनीति पर टिका है। परन्तु समाज के कई तबकों से उठने वाली आवाज़ों ने साबित कर दिया है कि धर्मनिरपेक्षता की आवाज़ दबेगी नहीं। एक ही अहाते में मंदिर व मस्जिद के सहअस्तित्व के बुनियादी सिद्धांत को 22-23 दिसम्बर 1949 तक व्यवहारिक रूप में लागू रखा गया था। मुस्लिम मस्जिद में नमाज़ पढ़ते थे और हिन्दू उसी अहाते के एक चबूतरे पर पूजा करते थे। इसी चबूतरे को वे श्री रामचन्द्र का जन्म-स्थान मानते थे। (मस्जिद से करीब 100 कदम की दूरी पर) यह चबूतरा 17 फुटx21 फुट का ऊंचा-सा स्थान है। इन दोनों के बीच रेलिंग लगा दी गई है।

बनना समस्या का

आखिर 22-23 दिसम्बर 1949 के दिन क्या हुआ? राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर.एस.एस.) के अखबार आर्गेनाइज़र (मार्च 29, 1987) का दावा है कि

"23 दिसम्बर 1949 की ऐतिहासिक सुबह जन्म-स्थान पर भी राम चन्द्र और सीता देवी की मूर्तियां चमत्कारिक रूप से प्रकट हुईं। हिन्दू भक्तगण इसको देखकर झूम उठे और हज़ारों की संख्या में उमड़ पड़े"

और सरकार ने इस जगह को विवादास्पद घोषित करके ताले डाल दिए। सच्चाई इससे बिल्कुल अलग है और दो गैर-विवादास्पद दस्तावेज़ों में दर्ज़ है- एक, जिला दण्डाधिकारी के.के. नायर द्वारा उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री गोविन्द वल्लभ पंत, मुख्य-सचिव और गृह-सचिव को 23 दिसम्बर 1949 को सुबह साढ़े दस बजे भेजा गया एक रेडियो संदेश जिसमें लिखा है -

"रात को जब मस्जिद सुनसान पड़ी थी, तब कुछ हिन्दू बाबरी मस्जिद में घुसे और वहां मूर्ति स्थापित कर दी। डी.एम. और एस.पी. और पुलिस बल मौके पर तैनात। हालात काबू में। रात को 15 पुलिस की टुकड़ी ड्यूटी पर थी पर कोई कार्यवाही नहीं की।"

यह संदेश पुलिस कांस्टेबल माता प्रसाद द्वारा अयोध्या थाने में दर्ज़ कराई गई रिपोर्ट पर आधारित है। नीचे वह एफ.आई.आर. दी गई है जो अयोध्या थाने के सब इंस्पेक्टर राम दुबे ने 23 दिसम्बर 1949 को लिखी:

> *"माताप्रसाद के मुताबिक जब वह करीब सुबह आठ बजे जन्म-भूमि पहुंचा तो पता चला कि 50-60 लोग दरवाज़े का ताला तोड़कर या नसैनी से दीवार फांदकर बाबरी मस्जिद में घुसे थे और वहां श्री भगवान की मूर्ति स्थापित कर दी और बाहर और अन्दर की दीवारों पर गेरू से सीता राम वगैरह लिख दिया। ड्यूटी पर तैनात*

हंसराज ने उन्हें रूकने को कहा पर वे नहीं माने। पी.ए.सी. को बुलाने से पहले ही ये लोग मस्जिद में घुस चुके थे। जिले के अधिकारी मौके पर पहुंचे और ज़रूरी बन्दोबस्त में लग गए। बाद में 5-6 हज़ार लोग इकट्ठे हो गए और भजन गाते और धार्मिक नारे लगाते हुए मस्जिद में घुसने की कोशिश करने लगे परन्तु उन्हें रोक दिया गया और कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। राम दास, राम शक्ति दास और कुछ अन्य अनजान लोग चोरी छिपे मस्जिद में घुसे और इसकी पवित्रता नष्ट की। ड्यूटी पर तैनात सरकारी कर्मचारी और कई अन्य इसके गवाह हैं। इसीलिए इसे लिखकर दर्ज किया।"

तो यह है मूर्ति प्रकट होने की दास्तान। आज तक यह नष्ट पवित्रता लौटाई नहीं गई है। यह हमारी कानूनी व राजनैतिक व्यवस्था पर एक धब्बा है, हमारी धर्म निरपेक्षता का मख़ौल है। "प्रकट" होने का यह चमत्कार दरअसल अखिल भारतीय रामायण महासभा द्वारा रामचरित मानस के अखंड पाठ का "क्लाइमेक्स" था। उस समय सिर्फ एक व्यक्ति था जो इस अनाचार के खिलाफ खुलकर बोला था और आज तक बोलता है-अक्षय ब्रह्मचारी। वे उस समय फ़ैज़ाबाद जिला कांग्रेस के सचिव थे। उन्होने लाल बहादुर शास्त्री को लिखा और 12 जून 1950 को भूख हड़ताल पर बैठ गए। लाल बहादुर शास्त्री ने मात्र इतना ही कहा *"अन्तिम फैसला तो अदालत का निर्णय आने पर ही लिया जा सकता है।"*

परन्तु अक्षय ब्रह्मचारी ने सही ही सोचा था कि *"एक टाइम बम है।"* नवम्बर 1949 में ही मुस्लिमों की कब्रें खोद डाली गई थीं। उत्तेजक भाषणों और पर्चों के साथ अभियान की शुरूआत की गई। 23 दिसम्बर को सुबह 9 बजे अक्षय ब्रह्मचारी को मूर्ति रखने की खबर मिली और वे कलेक्टर के साथ मौके पर पहुंचे। उनका कहना है कि *"उस समय आसानी से मस्जिद को बचाया जा सकता था और मूर्तियां हटाई जा सकती थीं परन्तु कलेक्टर ने कुछ न करना उचित समझा।"*

प्रधानमंत्री नेहरू बहुत नाराज़ हुए और गोविन्द वल्लभ पंत को गलती सुधारने के लिए कहा। मुख्य सचिव भगवान सहाय और पुलिस महानिरीक्षक वी.एन. लाहिरी ने संदेश भेजे कि मूर्ति हटा दी जाए। परन्तु कलेक्टर नायर ने यह कहकर टाल दिया कि *"ऐसा करने से कई मासूम ज़िन्दगियों का नुक्सान होगा।"* बाद में नायर इस्तीफा देकर जनसंघ के प्रत्याशी बने।

अक्षयजी ने कहाः *"फ़ैज़ाबाद और अयोध्या के मुस्लिमों में दहशत है और उन्होंने अपने परिवारों को बाहर भेज दिया है। मेरे लिए यह मस्जिद या मुस्लिमों की रक्षा का प्रश्न नहीं है। मैं इसे कांग्रेस और महात्मा के उन आदेशों की रक्षा के रूप में देखता हूं जिनके लिए हमने इतने दिनों संघर्ष किया है। यदि हम इन प्रतिक्रियावादी विचारों को अपनी पूरी ताकत से नहीं रोकते तो कांग्रेस के आदर्श मर जाएगें और प्रतिक्रियावादी ताकतें देश पर हावी हो जाएंगी।" "उन्हें (हिन्दुओं को) ऐसा लगता है कि चूंकि इस देश की आबादी का 85% हिस्सा हिन्दू है इसलिए वे जो चाहे कर सकते हैं।"*

29 दिसम्बर, 1949 के दिन एक मजिस्ट्रेट ने दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 145 के तहत मुस्लिमों को मस्जिद का कब्ज़ा वापिस न देने का आदेश दिया और साथ ही उक्त संपत्ति को सरकारी नियंत्रण में दे दिया।

मुस्लिमों को मस्जिद में नमाज़ पढ़ने की पूरे तौर पर मनाही है। अलबत्ता हिन्दुओं को अनुमति है कि वे बाजू के दरवाज़े से पूजा कर सकें और मूर्ति के दर्शन कर सकें। इसके अलावा वे वहां नियुक्त 4 पुजारियों के माध्यम से प्रसाद वगैरह भी चढ़ा सकते हैं।

16 जनवरी 1950 को किसी गोपाल सिंह विशारद ने पूजा के अधिकारों की घोषणा के लिए एक मामला दायर किया। जज ने मूर्त्ति हटाने या पूजा की वर्तमान स्थिति

में हस्तक्षेप करने पर रोक लगा दी। यहां मुद्दा मात्र पूजा के पूर्ण अधिकार का था। मस्जिद लौटाना किसी के दिमाग में नहीं था। आखिर क्यों? क्योंकि जज का निष्कर्ष था कि *"यह तथ्य विवाद से परे है कि इस मामले की सुनवाई के दिन श्री भगवान रामचंद्र और अन्य की मूर्तियां वहां मौजूद हैं।"* यह 3 मार्च 1951 की बात है। बहरहाल 24 अप्रैल 1950 को फैज़ाबाद के उप-आयुक्त जे. एन. उग्रा ने उ.प्र. सरकार के प्रतिनिधि के रूप में अदालत में लिखित बयान में कहा कि

"इस मामले में संदर्भित संपत्ति बाबरी-मस्जिद के नाम से जानी जाती है और काफी समय से मुस्लिमों द्वारा प्रार्थना के लिए मस्जिद के रूप में उपयोग होती रही है। यह कभी भी श्री रामचंद्रजी के मन्दिर के रूप में इस्तेमाल नहीं हुई है।"

वे आगे कहते हैं: *"22 दिसम्बर 1949 की रात को श्री रामचन्द्रजी की मूर्ति चोरी-छिपे और गलत तरीकों से अन्दर रखी गई।"*

इस बयान से भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवानी के इस दावे का खण्डन होता है कि 1936 से इस मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ी गई है। मस्जिद के इमाम 93 वर्षीय अब्दुल गफ्फार ने सण्डे मेल को दिए एक इंटरव्यू में पुष्टि की है कि मुस्लिम मस्जिद में होते थे और हिन्दू चबूतरे पर।

1936 के साम्प्रदायिक दंगों में मस्जिद को क्षति पहुंचाई गई थी। तब सरकारी खर्च से इसकी मरम्मत की गई थी। 7 अक्टूबर 1984 को राम जन्मभूमि कृति समिति का गठन हुआ और उसी दिन इसने ताला खोलो आंदोलन की शुरूआत कर दी और बाद में रथ यात्रा शुरू की। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के कारण यह कार्यक्रम रुक गया परन्तु 25 अक्टूबर, 1985 को फिर से शुरू किया गया। 9 मार्च 1986 की सीमा रेखा तय की गई। उस समय वि.हि.प. के एक नेता के अनुसार राजीव गांधी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि शिवरात्री (8 मार्च) से पहले भक्तों के लिए दरवाज़े खुल जाने चाहिए (स्टेट्समैन 20 अप्रैल, 1986)।

25 जनवरी 1986 को एक स्थानीय वकील ने पूजा पर से प्रतिबन्ध हटाने के लिए मुसिफ की अदालन में एक मामला दायर किया। मुसिफ ने इस पर निर्णय देने से इन्कार कर दिया क्योंकि हाई कोर्ट में 1950 से मामला चला आ रहा था। 31 जनवरी 1986 को इस फैसले पर अपील हुई जिसकी सुनवाई 1 फरवरी को हुई। इसकी जानकारी मिलने पर मोहम्मद हाशिम ने मामले में सुनवाई के लिए दरखास्त दी पर इसे नामंजूर कर दिया गया। जिला न्यायाधीश के.एम. पांडे ने कानून व व्यवस्था को लेकर कलेक्टर व एस.पी. की दलीलें सुनीं व 40 मिनट में ताला खोलने के आदेश दे दिए। उनका फैसला था कि *"यह साफ है कि कानून और व्यवस्था या मूर्तियों की सुरक्षा की दृष्टि से ताला लगाए रखना ज़रूरी नहीं है। इससे आवेदनकर्त्ता और समुदाय के अन्य लोगों को अनावश्यक तकलीफ होती है।"*

पूरे मामले में मुस्लिम समुदाय की बात सुनने से इन्कार करने के बाद न्यायाधीश ने कहा : *"सभी पक्षों को सुनने के बाद साफ है कि ताले खोल दिए जाने और भक्तों व तीर्थयात्रियों के मूर्ति देखने व पूजा करने से दूसरे संप्रदाय के लोग यानि मुस्लिमों पर कोई असर नहीं पड़ेगा। यह बात विवाद से परे है कि 1950 व 1951 के अदालती आदेश के फलस्वरूप पिछले 35 सालों से हिन्दुओं को पूजा का बेरोक अधिकार प्राप्त है। अतः ताला खोलने से आसमान नहीं गिर जाएगा। जिला दण्डाधिकारी ने आज मेरे समक्ष बयान दिया है कि मुस्लिम संप्रदाय को विवादास्पद जगह पर प्रार्थना की अनुमति नहीं है। उन्हें वहां जाने की अनुमति भी नहीं है।"*

लालकृष्ण आडवानी का 25 मार्च 1986 का निम्नलिखित कथन ऐसी ही सुनवाई और फैसलों पर आधारित है: *"यदि साम्प्रदायिक भावनाएं भड़काने की कोशिश होती है तो मैं सोचता हूं कि यह गलत है। पर यदि साधारण तरीके*

से कोई चीज़ ठीक की जा रही है जैसे रामजन्मभूमि तो मुझे नहीं लगता कि हमें सफाई देने की कोशिश करनी चाहिए।"

किसी काल्पनिक गलती को सुधारने का यह अजीब तरीका है कि उसके लिए सोच समझकर ताकत और धोखे से एक विकराल अन्याय किया जाए जिसमें लाखों लोगों की ज़िन्दगी तबाह हो जाए। इस बात का कोई सबूत नहीं है कि यह मस्जिद रामचंद्रजी की जन्मभूमि पर बनी हो या उनके सम्मान में बना कोई मन्दिर तोड़कर बनाई गई हो। वास्तव में मस्जिद पर दावा तो बाद में किया गया। पहले मात्र चबूतरे का दावा था।

इंडियन एक्सप्रेस में संजय सूरी ने अयोध्या से लिखाः

> ***"विवादास्पद जगह को पंडित लोग भी राजा राम का जन्म स्थान नहीं मानते।"***
>
> ***"पंडित लोग, जो जन्म का समय निश्चित नहीं कर पाए हैं, जन्म स्थान ठीक चबूतरे को बताते हैं। चबूतरा विवादास्पद इलाके के बाहर है। जन्म स्थान पर मुस्लिम कोई हक नहीं जताते।"***

इतिहास

हाल में उभरे सारे सबूत विहिप के दावों के खिलाफ जाते हैं। उनके दावों के समर्थन में रत्ती भर सबूत नहीं हैं।

1. भारतीय पुरातत्व विभाग ने वाल्मिकी रामायण में वर्णित 5 स्थानों का सर्वेक्षण किया। अयोध्या इनमें से एक है। इस विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक *"इस बात में कोई शक नहीं कि वर्तमान अयोध्या रामचंद्रजी की अयोध्या नहीं है और बाबरी मस्जिद स्थल पर कोई मन्दिर नहीं था।"*
2. राम के जन्म समय का ठीक-ठीक पता लगाने में बहुत दिक्कतें हैं। कुछ लोग उन्हें त्रेता युग यानि दस लाख साल पहले का मानते हैं तो कुछ ईसा से 14-15 सदी पहले का। विख्यात पुरातत्ववेत्ता एच.डी. सांकलिया से पूछा गया *"क्या आप अयोध्या में वह स्थान बता सकते हैं जहां पर राम का जन्म हुआ?"* उनका जवाब था *"नहीं, मेरे विचार से यह बताना संभव नहीं है।"*
3. तुलसीदास की रामचरित मानस में मन्दिर तोड़े जाने या मस्जिद बनाए जाने का कोई वर्णन नहीं है। मस्जिद बनने के समय (सन् 1528) वे 30 वर्ष के थे और अयोध्या में रहते थे। यह असंभव है कि उनकी आंखों के सामने यह सब हुआ हो और उन्होंने लिखा न हो।
4. कई सारे इतिहाकारों ने स्पष्ट किया है कि उन्नीसवीं सदी से पहले बाबरी मस्जिद को लेकर किसी विवाद का कोई सबूत नहीं है। पहले विवाद दरअसल एक अन्य स्थान हनुमान बैठक को लेकर था। ऐसा लगता है कि पूरा विवाद 19वीं सदी में गढ़ा गया।

सन् 1813 में जान लेडन ने बाबर की फारसी पुस्तक का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित किया। इसमें लेडन ने दावा किया कि सन् 1528 में बाबर अयोध्या से गुज़रा था। **बाबर की इस संदिग्ध मौजूदगी को आगे चलकर अंग्रेज़ इतिहासकारों ने तोड़-मरोड़कर इस बात का सबूत बना दिया कि बाबर ने रामजन्म भूमि मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनवाई। लेडन ने इस बात का कतई ज़िक्र नहीं किया है।**

बाबरनामा पढ़कर ऐसा लगता है कि यद्यपि बाबर कट्टर मुसलमान था पर फिर भी अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु था।

अयोध्या महात्मय•• के आधार पर राम का जन्म

••"अयोध्या महात्म्य" नाम से आजकल कई किताबें अयोध्या की गलियों में बेची जा रही हैं। वहां जाने वालों का कहना है कि आजकल कम से कम 4 अयोध्या महात्म्य बिक रही हैं। इनमें से किसको मूल महात्म्य मानें इस पर विवाद है।
जिस ग्रंथ का जिक्र प्रस्तुत लेख में किया गया है वह संभवतः सबसे पुराना है। यह ग्रंथ भी 16वीं शताब्दी से पुराना शायद ही होगा क्योंकि इसमें इलाहाबाद का जिक्र है। "इलाहाबास" नाम अकबर और जहांगीर के समय प्रचलित था और "इलाहाबाद" शाहजहां के समय। अतः यह कहा जाता है कि यह 17 वीं शताब्दी या उसके बाद ही लिखा ग्रंथ होगा। मगर इस विषय में और शोध किये बगैर कुछ भी दृढ़ रूप से नहीं कहा जा सकता है।

स्थान मस्जिद के दक्षिण पूर्व में स्थित है।

इस पूरे विवाद की जड़ अंग्रेज़ इतिहासकारों के भ्रामक लेखन में नज़र आती है। बगैर तथ्यों के सुनी सुनाई बातों के आधार पर या खालिस कल्पना के आधार पर धीरे-धीरे एक कहानी गढ़ी गई प्रतीत होती है।

इसमें सबसे पहला नाम एनेट बेवरिज का है। उनका कहना है कि ***"यह माना जा सकता है** कि मस्जिद के निर्माण का आदेश बाबर के अवध प्रवास के दौरान दिया गया होगा।"*

अवध और अयोध्या एक ही जगह नहीं है जैसा कि वे मानकर चलती हैं। फिर वे मुहम्मद पैगम्बर को असहिष्णु बताते हुए कहती हैं कि ***"बाबर किसी मन्दिर की जगह मस्जिद स्थापित करना अपना फ़र्ज़ समझेगा।"*** बाबरनामा में ऐसा कुछ नहीं है, यह मात्र बेवरिज का मानना है।

दूसरा अंग्रेज़ लेखक पी. कार्नेजी है जिसने अयोध्या का विस्तृत इतिहास लिखा। उनके अनुसार अयोध्या में *"जन्मस्थान पर कम से कम एक सुन्दर मन्दिर तो **अवश्य ही रहा होगा"*** और ***"ऐसा लगता है** कि 1528 में बाबर अयोध्या आया और उसके आदेशों के तहत यह प्राचीन मन्दिर तुड़वाया गया।"*

प्रसिद्ध इतिहासकार सुशील श्रीवास्तव का कहना है कि बाबर द्वारा मन्दिर तुड़वाए जाने का कोई सबूत नहीं है। वास्तव में तो रामजन्म स्थान को लेकर अयोध्या में काफी मतभेद हैं। ऐसे कम से कम 15-16 मन्दिर हैं जिनके पुजारी अपने मन्दिर को रामजन्म स्थान मानते हैं। एक अन्य इतिहासकार आलोक मित्र ने साफ कहा कि ***"इसमें कोई शक नहीं है कि विवादास्पद जगह को रामजन्म भूमि बताना इतिहास गढ़ने की कोशिश कही जाएगी।"***

5. स्टेट्समैन में इन्द्रजीत गुप्त के एक पत्र में स्पष्ट किया गया कि यह पूरा मिथक उन्नीसवीं सदी की देन है। लेडन नामक ब्रिटिश इतिहासकार ने बाबर के संस्मरणों के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि सन् 1528 में बाबर पठानों से लड़ते हुए अयोध्या से गुजरा था। बाद के अंग्रेज़ इतिहासकार ने बाबर की इस मौजूदगी से ही यह निष्कर्ष निकाल लिया कि उसने मन्दिर तुड़वाया और मस्जिद बनवाई। इलाहाबाद विश्व विद्यालय के मध्यकालीन व आधुनिक इतिहास के विशेषज्ञ सुशील श्रीवास्तव ने अयोध्या के इतिहास पर गहन शोध करके यह दिखा दिया है कि किस तरह से 1857 की क्रांति के पहले की हलचल से निपटने के लिए अंग्रेज़ों ने इस मनगढ़न्त मिथक का दुरूपयोग किया।

वास्तव में यदि बाबरनामा को देखा जाए तो स्पष्ट होता है कि हालांकि बाबर एक सच्चा मुसलमान था पर उसके मन में अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता का भाव था। वह कई मन्दिरों में गया था और उनकी वास्तुकला की तारीफ भी की थी। कहीं भी उसके मन के द्वेष का कोई प्रमाण नहीं मिलता।

दरअसल अयोध्या महात्म्य (तीर्थयात्रियों के लिए मार्गदर्शिका) के आधार पर राम के जन्म स्थान की जगह मस्जिद से दक्षिण-पूर्व में निकलती है। सुशील श्रीस्तवाव, शेर सिंह और इन्दुधर द्विवेदी की एक अनुसंधान टीम ने तीन दिन अयोध्या का सर्वेक्षण किया। इस दल का निष्कर्ष है कि अयोध्या महात्म्य के मुताबिक 7 अलग-अलग जगहों पर रामजन्म भूमि हो सकती है। इनमें से कोई बाबरी मस्जिद को छूती तक नहीं।

6. 19 जनवरी 1885 को जन्मस्थान के एक महन्त रघुबरदास ने अदालत में अपील करके चबूतरे पर मन्दिर बनाने की अनुमति मांगी। अदालत ने यह माना कि चबूतरा जन्मस्थान है पर मन्दिर बनाने की अनुमति नहीं दी। अदालत ने अपने निर्णय में बाबर को काफी भला-बुरा कहा। परन्तु प्रमुख बात यह है कि मामला चबूतरे को लेकर था-मस्जिद तो कहीं थी ही नहीं। मस्जिद पर दावा करने की बात तो एक सौ बरस बाद शुरू हुई।

(इकनोमिक एण्ड पोलिटिकल वीकली, वर्ष 24, अंक 44-45 नवंबर 4-11,1989 में छपे ए. जी. नूरानी के लेख का सुशील जोशी द्वारा भावानुवाद)

यह धर्म के विरुद्ध है

मकान मालिक परेशान है
और आंगन में टहल रहा है, देख रहा है
दाहिनी ओर की दीवार पर
भीत फोड़ कर
एक पीपल उग आया है
दीवार में दूर तक
पड़ गयी है दरार

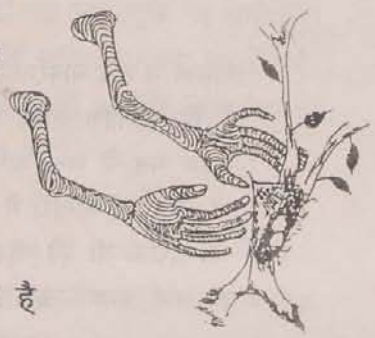

पर पीपल को
न तो उखाड़ा जा सकता है
न काटा जा सकता है
क्योंकि यह
धर्म के विरुद्ध है

मकान मालिक परेशान है
और आंगन में टहल रहा है, देख रहा है
पीपल और बड़ा हो गया है
पूजा के लिए उसके आसपास
इकट्ठे होने लगे हैं
मोहल्ले के लोग

मकान एक सार्वजनिक स्थल
बनता जा रहा है
पर वह किसी को भी रोक
नहीं पा रहा है
क्योंकि यह
धर्म के विरुद्ध है

मकान मालिक परेशान है
और आंगन में टहल रहा है, देख रहा है
पीपल ने जड़ें और फैला ली हैं
दीवार धसक गयी है पूरी तरह
घर एक तरफ से
पूरा नंगा हो गया है
जहां से ताक झांक कर रहे हैं लोग
पर वह किसी से
कुछ नहीं कह पा रहा है
क्योंकि यह
धर्म के विरुद्ध है

मकान मालिक परेशान
और आंगन मे टहल रहा है, देख रहा है
फैलती ही जा रही हैं
पीपल की जड़ें
और धसकता जा रहा है मकान

अपनी ही जमीन से
निर्वासित होता जा रहा है वह
वह मन-ही-मन बड़बड़ा रहा है
ऐसी की तैसी इस .....
पर असंभव है इसके आगे कुछ कहना
क्योंकि यह
धर्म के विरुद्ध है

राजेश जोशी
("मिट्टी का चेहरा" से)

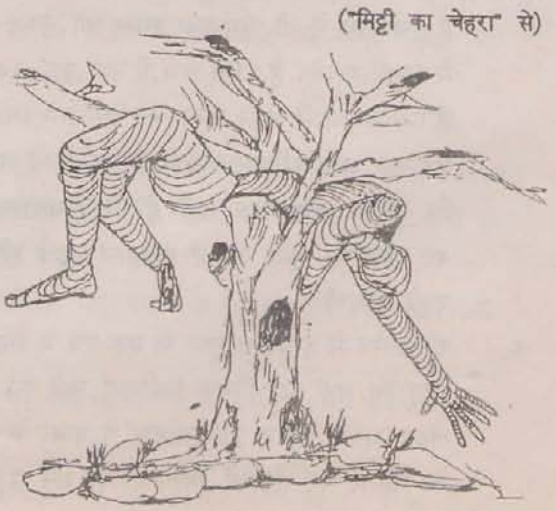

सबसे सस्ता गोश्त

(चार या छः पात्र लड़ाई की मुद्रा में यह गाना गाते हैं।)

हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई 2
कहां है कोई भाई भाई 2
करते सब मिल के हैं लड़ाई 2
मार-पीट और आग लगाई 2
जब देखो तब आफत आई 2
रोज़ लड़ाई - रोज़ भिड़ाई 2

(गाते हुए लोगों में मिल जाते हैं। चार पात्रों का एक-एक करके प्रवेश)

पहलाः धरम के नाम पर बच्चों की टांगे चीर देते हैं।
दूसराः धर्म के नाम पर औरत की इज्ज़त लूट लेते हैं।
तीसराः धर्म के नाम पर ज़िन्दा जलाते हैं हम लोगों को।
चौथाः धर्म के नाम पर लाशों की मण्डी हम सजाते हैं।

(हिन्दू और मुस्लिम नेता मंच पर आते हैं, गले मिलकर नाचते हुए गाते हैं।)

नेता हैं हम जात के
हिन्दू हैं न मुस्लिम 3
काम हमारा लूट के खाना 2
हिन्दू हैं न मुस्लिम
नेता हैं हम जात के .....

हिन्दू नेताः (सोचते हुए) चुनाव सिर पर आ गए, काम कुछ हुआ नहीं, वोट फिर लेना पड़ेगा ..... वैसे तो मेरे चुनाव क्षेत्र में हिन्दूओं का बहुमत है..... पर वो सब मुझसे घृणा करते हैं।

मुस्लिम नेताः मेरे चुनाव हलके में मुसलमानों की तादाद ज़्यादा है पर वो सब मेरी शक्ल से नफरत करते हैं।

दोनों (हिन्दू, मुस्लिम नेता): (एक साथ) पर हम नेता हैं ..... हम नफरत को प्यार में बदलना जानते हैं ..... हम उनसे कहेंगे .....

मुस्लिम नेताः बिरादराने इस्लाम! इन हिन्दूओं ने, इन काफिरों ने तुम्हें बर्बाद कर दिया ..... तुम्हारे घर उजाड़ दिए ..... तुम्हे ज़िन्दा जला दिया ..... लेकिन फिक्र की कोई बात नहीं है ..... ये आपका बंदा ..... आपका गुलाम आपकी खिदमत के लिए आपके साथ है।

हिन्दू नेताः आर्यावर्त के सपूतों, इन मलेच्छ मुसलमानों ने तुम्हारी धरती मां के टुकड़े कर दिए। इन विदेशियों को यहां रहने का क्या अधिकार है। इन्होंने तुम्हारे मन्दिरों को तोड़ा है, तुम्हारी मां-बहनों की इज्ज़त खराब की है, तुम्हारे बच्चों के गले काटे हैं.....पर तुम्हें घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है ..... अब आपका ये वीर सपूत मैदान में उतर आया है।

मुस्लिम नेताः (हिन्दू नेता से) मैं मुसलमान भाईयों का दिल जीत लूंगा ..... जब उन्हें कर्फ्यू पास दिलवाऊंगा .....।

हिन्दू नेताः मैं अपने हिन्दू भाईयों में राहत सामग्री बटवाऊंगा।

मुस्लिम नेताः मैं जमानतें कराऊँगा।

हिन्दू नेताः मैं मन्दिर के लिए चन्दा जमा करूंगा।

मुस्लिम नेताः मैं मस्जिदों की मरम्मत कराऊंगा।

हिन्दू नेताः हर-हर महादेव।

मुस्लिम नेताः अल्लाह-ओ-अकबर।

(एक मुल्ला "अल्लाह-ओ-अकबर" तथा पंडित "राम राम" रटते हुए, भागते हुए मंच पर आते हैं। हिन्दू नेता के सामने पंडित तथा मुस्लिम नेता के सामने मुल्ला जमीन पर बैठ जाते हैं और दोनों नेताओं के पैर पकड़ लेते हैं।)

मुस्लिम नेताः (मुल्ला से) क्या तकलीफ है मुल्ला जी? अमां क्यों परेशान हो?

मुल्लाः क्या अर्ज़ करूं हुजूरे आला, मस्जिद के लिए चन्दा कम जमा होता है, मेरी साख गिर रही है, और तो और इन नौजवानों ने तो मस्जिद में आना तक छोड़ दिया है।

हिन्दू नेताः क्या कष्ट है पंडित जी?
पंडितः क्या बतावें नेताजी, दान, दक्षिणा, पूजा-पाठ, हवन इत्यादि कोई नहीं कराता, बहुत विधर्म हो रहा है।
हिन्दू नेता और मुसलमान नेताः (एक साथ) दोनों खड़े हो जाओ .... जैसा कहा जाए वैसा करो ...... पांचों उंगलियां घी में होंगी ...... सिर कढ़ाही में होगा .... *(नेपथ्य से आवाज आती है .... फिर देश का क्या होगा?)* .... देश चूल्हे में होगा।

(चारों एक साथ गाते हैं)

सारे जहां से अच्छा,
हिन्दोस्तां हमारा .....हमारा 2
हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलसितां हमारा-हमारा
सारे जहां से अच्छा ....
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना,
हिन्दी हैं हम ..... हिन्दी हैं हम....वतन है
हिन्दोस्तां हमारा-हमारा
सारे जहां से अच्छां ....

मुस्लिम नेताः मुल्ला जी (हाथ में थमी पोटली दिखाते हुए) इसे देख रहे हैं।
मुल्लाः क्या है इसमें हुज़ूर?
मुस्लिम नेताः इसमें है सूअर का गोश्त .... ।
मुल्लाः लाहौल विला कूवत, नौजोविल्ला, नौजोविल्ला, नौजोविला इसका क्या होगा हुजूर?
मुस्लिम नेताः क्या होगा? अमां मियां क्या बच्चों जैसी बातें कर रहे हैं? सोचिए-सोचिए, भला क्या होगा इसका?
मुल्लाः (समझने की कोशिश करते हुए) अच्छा मस्जिद में डलवाना है ....दंगा-फसाद करवाना है ....हैं........हैं........हैं..........हैं।
मुस्लिम नेताः आप खासे समझदार हैं मियां।
मुल्लाः हुजूर की सोहबत का कमाल है।

(मुस्लिम नेता और मुल्ला फ्रीज़ हो जाते हैं।)

हिन्दू नेताः (हाथ में थमी पोटली दिखाते हुए) पंडित जी इसे देख रहे हैं।
पंडितः इसमें क्या है सरकार .... ?
हिन्दू नेताः इसमें है गाय का मांस।
पंडितः इसमें .... राम, राम, राम, राम, ... भला इसका क्या होगा नेताजी?
हिन्दू नेताः क्या होगा? अबे 10 साल से तुझे पाल रहे हैं फिर भी पूछ रहा है क्या होगा? मंदिर में फिकवाना है, दंगा करवाना है।
पंडितः जी समझ गया .... सब कुछ समझ गया सरकार .... बिल्कुल समझ गया।
हिन्दू और मुसलमान नेताः (एक साथ मुल्ला और पंडित से) दोनों अपनी-अपनी पोटलियां उठाओ .... जाओ मंदिर में गाय और मस्जिद में सूअर पहुंचाओ।

(दोनों नेता मंच से बाहर चले जाते हैं, पंडित और मुल्ला पोटलियां लिए मंच पर रह जाते हैं। दोनों पीछे की ओर डरते हुए चलते हैं, दोनों की पीठ आपस में टकराती है, दोनों चौंक जाते हैं, इसी बीच गुण्डे का मंच पर प्रवेश होता है।)

गुण्डाः (पंडित से) आ गये हम .... क्या काम पड़ गया पंडितजी हमसे? .... (पोटली देखकर) अच्छा वही पुराना काम? (पंडित पोटली देता है, गुण्डा पोटली फेंककर) ..... अबे पहले माल निकाल। (पंडित पैसे देता है।)
गुण्डाः (पैसा लेकर) क्यों बे बस? साले खुद तो सारे शहर को लूट रहे हो और हमें बस इतना ही? और माल निकाल।

(पंडित कुछ पैसे और देता है। गुण्डा पैसे और पोटली लेकर मुल्ला के पास जाता है।)

गुण्डाः (मुल्ला से) कहो मुल्ला जी, कैसे हमें तकलीफ दिया? (मुल्ला की पोटली देखकर) तो तुम भी.........

ठीक है, ठीक है। .... चल माल निकाल ....
अबे जल्दी कर ....टाईम मत खराब कर।
(मुल्ला पैसे देता है)
अबे इतने ही .... और माल निकाल।
(मुल्ला और पैसे देता है)
चल अब फूट यहां से, काम हो जाएगा।

(मुल्ला का प्रस्थान।
मंच के दो हिस्सों में एक तरफ हिन्दू नेता, पंडित तथा कुछ लोग मंदिर में पूजा कर रहे हैं, और दूसरी ओर मुस्लिम नेता, मुल्ला और कुछ लोग नमाज़ पढ़ने का अभिनय कर रहे हैं)

मंदिर में: रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम।
(लगातार गाते हैं)

मस्जिद में: अल्ला हो अकबर।
(लगातार)

(इसी बीच गुण्डा आता है और दोनों पोटलियों को क्रमशः मंदिर और मस्जिद में फेंक देता है। पोटलियों पर निगाह पड़ते ही दोनों तरफ हंगामा मच जाता है, दोनों तरफ के लोग हथियार लेकर मंच पर आ जाते हैं।)

हिन्दू: हर-हर महादेव *(नारे लगाते हैं)*।
मुसलमान: अल्लाह्-ओ-अकबर .... *(नारे लगाते हैं)*।
हिन्दू नेता: इन मलेच्छ मुसलमानों ने हमारे मंदिर में गाय का मांस फेंका है .... हमारे मंदिर को अपवित्र किया है।
पंडित: हम इन सालों का खून पी जाएंगे।
मुस्लिम नेता: इन हिन्दूओं ने, इन काफिरों ने हमारी मस्जिद में सूअर का गोश्त फेंका है। इन्होंने हमारी मस्जिद को नापाक किया है।
मुल्ला: हम इन हरामजादों को जहन्नुम में पहुंचा देंगे।
हिन्दू: हर-हर महादेव।
मुसलमान: अल्लाह्-ओ-अकबर।

(मंच पर दंगे का दृश्य स्थापित होता है, नारों का शोर तेज़ होता जाता है। इसी बीच "साधारण व्यक्ति" दोनों के बीच में आता है।)

साधारण आदमी: (जोर से) बंद करो ये लड़ाई .... ठहरो, बात तो सुनो।
(दोनों पक्ष शांत हो जाते हैं।)
आखिर बताओ तो .... बात क्या है ?

हिन्दू नेता: इन मुसलमानों ने हमारे मंदिर में गाय का मांस फेंका है।
पंडित: हमारे मंदिर को अपवित्र कर दिया।
हर-हर महादेव।
मुसलमान नेता: ये देखो इन हिन्दुओं ने हमारी मस्जिद में सूअर का गोश्त फेंका है।
मुल्ला: हमारी मस्जिद को नापाक कर दिया।
अल्लाह्-ओ-अकबर।
हिन्दू: हर-हर महादेव।
मुसलमान: अल्लाह्-ओ-अकबर।
साधारण आदमी: चुप रहो। तुम लोग न हिन्दू हो न मुसलमान। तुम लोग सिर्फ लड़ने की नीयत से घर से निकले हो।
पंडित: हम हिन्दू हैं, ये देखो हमारे पास शंकराचार्य जी का प्रमाण पत्र है। हर-हर महादेव।
मुसलमान: हम मुसलमान हैं यह देखो हमारे पास इमाम बुखारी का सर्टिफिकेट है। अल्लाह्-ओ-अकबर।

(इसी बीच साधारण आदमी दोनों पोटलियों को ध्यान से देखता है।)

साधारण आदमी: बंद करो यह बकवास, यह सूअर और गाय का गोश्त नहीं है।
हिन्दू नेता: नहीं, यह गाय का मांस है।
मुसलमान नेता: नहीं, यह सुअर का गोश्त है।

(दोनों नारे लगाते हैं)

साधारण आदमीः नहीं मेरे भाई .... यह गाय और सूअर का गोश्त नहीं है। ध्यान से देखो .... अगर यह गाय का मांस होता सो इसमें रेशे होते .... कहां हैं रेशे? ...... अगर यह सुअर का गोश्त होता तो इसमें चर्बी होती .... कहां है चर्बी?

(हिन्दूओं और मुसलमानों को गोश्त दिखाता है)

हिन्दू नेता और मुसलमान नेताः फिर किसका गोश्त है?
साधारण आदमीः यह आदमी का गोश्त है, यह इन्सान का मांस है।
हिन्दू नेताः नहीं, यह गाय का मांस है।
मुस्लिम नेताः नहीं, यह सूअर का गोश्त है।
साधारण आदमीः नहीं मेरे भाई ...... मैंने दुनिया देखी है। क्या मैं गाय और सूअर के गोश्त को नहीं पहचानता? इसकी रंगत देखो, इसके रेशे देखो। यह वाकई आदमी का गोश्त है।
हिन्दू और मुसलमानः तुम सच कह रहे हो?
साधारण आदमीः हां मैं बिलकुल ठीक कह रहा हूं। यह आदमी का गोश्त है।
हिन्दू नेताः *(पंडित को एक तरफ ले जाकर)* पंडित जी ये ससुरा कहां से टपक पड़ा, साले ने सारा खेल चौपट कर दिया।
(लोगों से) चलो हिन्दू धर्म के रक्षकों यह गाय का मांस नहीं है। यह तो ससुरे किसी आदमी का मांस निकला।
पंडितः चलो भक्तो, आदमी के मांस से मंदिर अपवित्र नहीं होता।

मुसलमान नेताः *(मुल्ला को एक तरफ ले जाकर)* अमां मुल्लाजी ये साला कहां से आ गया, अच्छा खासा काम खराब हो गया।
(लोगों से) चलो साहिबानों, अपने इस्लाम की इज्जत बच गई। ये तो ससुरे आदमी का गोश्त निकला।
मुल्लाः मस्जिद नापाक नहीं हुई। आदमी के गोश्त से मस्जिद नापाक नहीं होती। चलो भाईयो अपने-अपने घर चलो। .... ससुरा आदमी का गोश्त .... सारी तमन्ना खाक में मिल गई।
साधारण आदमीः *(लोगों से)* ये गाय का मांस नहीं है मंदिर अपवित्र नहीं हुआ .... ये सूअर का गोश्त नहीं है मस्जिद नापाक नहीं हुई। लेकिन आदमी का गोश्त, इन्सान का मांस, इसकी कोई कीमत नहीं? मंदिरों और मस्जिदों के नाम पर जो खून सड़कों पर बहता है उसकी कोई कीमत नहीं? आदमी के गोश्त की कोई औकात नहीं। ....

(सभी पात्र फिर मंच पर आते हैं और "हिन्दू मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई कहां है कोई भाई-भाई ....।" गीत दुबारा गाते हैं)

समाप्त

•• नोटः

(उपरोक्त नाटक के बाद सभी पात्र इस गीत को भी गा सकते हैं। ....)

मत बांटो इन्सान को

मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे ने, बांट
लिया भगवान को
धरती बांटी, सागर बांटा, मत
बांटो इन्सान को 2

हिन्दू कहता मंदिर मेरा, मंदिर
मेरा धाम है,
मुस्लिम कहता मक्का मेरा, अल्लाह
का ही नाम है 2
दोनों लड़ते, लड़-लड़ मरते,
लड़ते-लड़ते खत्म हुए,
दोनों ने इक दूजे पर ना जाने
क्या-क्या जुल्म किए,

किसका ये मकसद है और किसकी
चाल है जान लो,
धरती बांटी, सागर बांटा, मत
बांटो इन्सान को।

प्रजातंत्र में प्रजा को लूटे, यह
कैसी सरकार है,
लाठी, गोली, ईश्वर, अल्ला ये
सारे हथियार हैं 2

इनसे बचो और बच के रहो, और
लड़कर इनसे जीत लो,
हक है तुम्हारा चैन से रहना, अपने
हक को छीन लो,
अगर हो तुम शैतानी से तंग, खत्म
करो शैतान को,
धरती बांटी, सागर बांटा, मत बांटो
इन्सान को,
मंदिर, मस्जिद ....।

(गीत : विनय महाजन)

•यह नाटक निशांत नाट्य मंच के साथियों ने अज़ग़र वज़ाहत के नाटक के आधार पर विकसित किया है।

चले चलो

चले चलो दिलों में घाव ले के भी चले चलो
चलो लहूलहान पांव ले के भी चले चलो
चलो कि आज साथ-साथ चलने की ज़रूरतें
चलो कि ख़त्म हो न जाएं ज़िंदगी की हसरतें।

ज़मीन, ख्वाब, ज़िंदगी, यकीन सबको बांटकर
वो चाहते हैं बेबसी में आदमी झुकाए सर
वो चाहते हैं ज़िंदगी हो रोशनी से बेख़बर
वो एक-एक करके अब जला रहे हैं हर शहर
जले हुए घरों के ख्वाब ले के भी चले चलो ....

वो चाहते हैं बांटना दिलों के सारे वलवले
वो चाहते हैं बांटना ये ज़िंदगी के काफिले
वो चाहते हैं खत्म हो उम्मीद के ये सिलसिले
वो चाहते हैं गिर सकें न लूट के ये सब किले
सवाल ही हैं अब जवाब ले के भी चले चलो ....

वो चाहते हैं जातियों की, बोलियों की फूट हो
वो चाहते हैं धर्म को तबाहियों की छूट हो
वो चाहते हैं ज़िंदगी में हो फरेब, झूठ हो
वो चाहते हैं जिस तरह भी हो मगर ये लूट हो
सिरों पे जो बची है छांव ले के भी चले चलो
चले चलो दिलों में घाव ले के भी चले चलो ....

ब्रजमोहन

लघुकथा

पहचान

अमनप्रीत सिंह गिल
अलाव से साभार

"तुम किसलिए लड़ रहे हो?"
"अपनी अलग पहचान के लिए ....."
"तुम्हारी पहचान क्या है? क्या तुम अपनी पहचान जानते हो?"
उसकी तलवार इस तर्कशील सवाल के जवाब में उठी और उसकी गरदन उतार ले गयी। यही उसकी पहचान थी।

इतिहास के साथ राजनैतिक बदसलूकी न हो

प्रतिष्ठित जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से संबद्ध देश के चोटी के इतिहासकारों ने ठोस ऐतिहासिक, तर्कसम्मत साक्ष्यों के आधार पर अयोध्या के बारे में निम्न तथ्यों को रेखांकित करते हुए देश के सभी नागरिकों से अपील की है, कि वे कट्टरपंथी जुनूनियों को अपने स्वार्थ-साधने के लिए इतिहास के साथ राजनीतिक बदसलूकी करने से रोकें और सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखें। उनके परिपत्र के मुख्य मुद्दे इस प्रकार हैं:

• वाल्मीकि रामायण में उल्लेखित ब्योरों के अनुसार अयोध्या में दशरथी राम का जन्म ईसा से 3102 साल (जो त्रेता युग की समाप्ति का समय माना जाता हैं) पहले हुआ। ग्रंथ के अनुसार अयोध्या महलों और भवनों से सुसज्जित नगरी थी, किंतु यहां मिले ८वीं सदी ई.पू. के पुरावशेष नगर सभ्यता के नहीं हैं, अतः संभवतः वाल्मिकी द्वारा वर्णित अयोध्या अन्यत्र रही होगी।

• बौद्ध ग्रंथ श्रावस्ती और साकेत नगरियों का उल्लेख करते हैं। जैन ग्रंथ तथा विष्णु धमोत्तर पुराण भी साकेत को कौशल की राजधानी बताते हैं। पर इन ग्रंथों में भी यह नगरी गंगातट पर बसी बताई गई है, न कि सरयू तीर पर।

• साकेत का अयोध्या नाम, स्कंदगुप्त ने ५वीं सदी में रखा। स्थानीय जनश्रुति है कि त्रेता युग के बाद अयोध्या खो गई थी, गुप्त राजा विक्रमादित्य ने इसे एक योगी की मदद से पुनः खोजा। यदि ५वीं सदी से पहले अयोध्या का नाम अयोध्या नहीं, साकेत था, तो वाल्मिकी रामायण की अयोध्या कवि-कल्पना सिद्ध होती है।

• अयोध्या नगरी बौद्ध, शैव तथा जैन धर्मानुयायियों की ५वीं सदी के बाद से तीर्थ नगरी रही, जिसके ठोस साक्ष्य उपलब्ध हैं।

• रामभक्ति से यह नगरी १५वीं सदी के बाद रामानंदी संप्रदाय की मार्फत जुड़ती है। उन रामानंदी साधुओं ने भी १८वीं सदी के बाद ही यहां बसना शुरू किया। १९वीं सदी के बाद ही अयोध्या के राम जन्म भूमि होने की बात सरकारी रिकार्डों में उपलब्ध होती है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी मानस में राम जन्म भूमि की जगह पर कोई मंदिर होने का उल्लेख नहीं किया है। ठीक इसी प्रकार बाबर द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का कोई उल्लेख नहीं मिलता - मस्जिद पर उकेरे वाक्य इसके बाबर मीर बकी द्वारा बनवाए जाने का उल्लेख भर करते हैं।

• बाबर द्वारा बाबरी मस्जिद बनाने के लिए राम मंदिर के तोड़े जाने का उल्लेख केवल १९वीं सदी में अंग्रेज़ों के लिखे रिकार्डों में ही है। वे तो वैसे भी यह मान कर चलते थे कि हिंदू-मुस्लिम एक-दूसरे के शत्रु हैं। उनकी इस धारणा को झुठलाने वाली यह बात भी रिकार्डों में उपलब्ध है, कि मुसलमान शासकों में नवाब सफदरजंग से लेकर वाजिद अली शाह तक ने यहां हिंदू जनता की भावनाओं का आदर करते हुए मंदिर बनवाए, अखाड़े खुलवाए और हिंदू-मुस्लिम झगड़ों के उपजने पर विवाद का निपटारा शांतिपूर्ण उभयधर्मी जांच समिति की मार्फत किया। वाजिद अली शाह ने तो कुछ मुसलमान सांप्रदायिकतावादियों को मृत्युदंड भी दिया था।

• ये सारे ऐतिहासिक प्रमाण किसी प्रकार की जिरहबाज़ी अथवा झगड़े का हल प्रस्तुत करने के उद्देश्य से नहीं दिए जा रहे हैं, क्योंकि झगड़ा ऐतिहासिक वजहों या साक्ष्यों से नहीं राजनीतिक उद्देश्यों से उपजा है। यह ब्यौरा सांप्रदायिकता भड़काने वालों द्वारा फैलाए जा रहे मिथ्या प्रचार के खिलाफ इतिहासविदों का हस्तक्षेप हैं।

"इतिहास का राजनीतिक दुरुपयोग : बाबरी मस्जिद - राम जन्मभूमि विवाद" पुस्तिका निम्न जगहों पर उपलब्ध है-

1. *सैंटर फॉर हिस्टॉरिकल स्टडीज़,*
   जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय,
   नई दिल्ली - 110067
2. *एकलव्य,*
   कोठी बाज़ार,
   होशंगाबाद - 461001

कहानी

डायरी का पृष्ठ

पन्नालाल मनुष्य नहीं हिन्दू है। हिन्दुत्व का प्रतीक उसका यह नामकरण ही इस सत्य का प्रतिपादन करता है। हिन्दू भी कोई आप हम जैसा नहीं - कट्टर! हिन्दू जाति के उत्थान और उसे प्रलय काल तक जीवित रखने के लिए वह अपने जीवन तक का परित्याग सहज ही कर सकता है। ललाट में एक शिकन तक नहीं पड़ेगी।

हिन्दू जाति के विनाश की कल्पना से वह सिहर उठता है। उसके रक्त में उफान के फलस्वरूप भाप की क्रिया संचारित हो उठती है। आंखों में चिनगारियां दीप्त हो उठती हैं। दांत किटकिटा कर वह सूने नील गगन की ओर आंखें उठाकर देखता है और सूर्य के तप्त आलोक को अपने ही भीतर की ज्वाला मानकर मन ही मन प्रमुदित हो उठता है। वह स्वयं को संसार के सर्वोपरि निस्वार्थ त्यागी के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं समझता। अपनी सत्ता को जाति के नाम पर मिटा देना क्या कोई कम परित्याग है! उससे कोई पूछे, 'तुम्हारा नाम?'

वह गर्व के साथ दृढ़ स्वर में कहेगा, 'पन्नालाल संघी।' हां, तो इस पन्नालाल की दृष्टि ऐसी है कि वह शरीर पर धारण किये वस्त्रों और मनुष्य की सूरत द्वारा उसी क्षण पहचान लेता है कि वह कौन जात है?

जात से उसका मतलब-हिन्दू या मुसलमान। कोई भी अपरिचित अनजान व्यक्ति केवल उसकी जाति का होने से ही चिर-परिचित हिन्दू भाई बन जाता है। पर एक मुसलमान .....| जाने भी दीजिये, उसके संबंध में पन्नालाल के विचारों को लिखते हुए मुझे शर्म आती है। पर पन्नालाल जो है, उसे इस पर अभिमान है। अतुलनीय गर्व है। और है उसके जीवन का चरम आदर्श। जिसे प्राप्त करने के लिए वह प्रति क्षण बेकल है। साथ ही मुझे अपनी इस शर्म पर भी गौरव है।

दिल्ली स्टेशन के सामने की सड़क से सटी फुटपाथ पर वह लाल किले की ओर मुंह किये चल रहा था। सांझ का अंधेरा घिरने ही वाला है। चिन्ता की एक क्षीण रेखा उसके चेहरे पर उभर आई।

वह सुबह घर से निकला था, अब शाम होने आई। दिन के उजाले ने सांवली करवट भी बदल डाली, पर आज वह कुछ भी नहीं कर सका। सहसा पन्नालाल मन ही मन बड़बड़ा उठा-तो आज मेरी डायरी का पृष्ठ खाली ही रहेगा? नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता। गुरुजी को छूकर की गई प्रतिज्ञा ......|

इतने में पन्नालाल ने देखा -- सामने ही एक साइकिल रिक्शा आ रहा है। देखते ही पहिचान लिया कि रिक्शे वाला कौन जात है?
रिक्शे वाले के पास जाकर उसने पूछा, 'क्यों रे, दरियागंज ले चलेगा?'
रिक्शे वाले ने हंसने की कोशिश की पर वह हंस नहीं सका। फिर भी धीरे - से बोला, 'क्यों नहीं, ज़रूर ले चलूंगा। बैठिये बाबू साहब।'

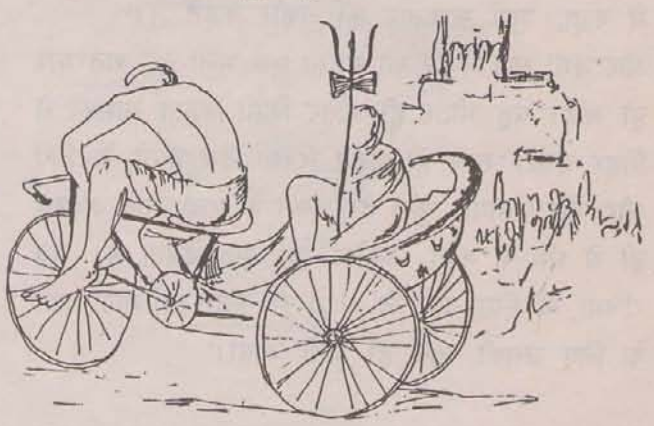

और बाबू साहब अन्दर बैठ गये। पीठ को सहारा देते हुए बोले, 'चल जल्दी चल, आठ आने दूंगा।'
रिक्शे वाले ने धीरे से कहा, 'जो आपकी मरजी। मेहरबानी है बाबू साहब की। आप जैसों की दया पर ही तो ......।'
पन्नालाल ने झिड़की के स्वर में कहा, 'अरे, जल्दी भी चल जरा, बेकार की बातें बनाये जा रहा है।'

रिक्शे वाले ने प्रत्युत्तर में कुछ और जोर लगाया। पर वह चुप भी न रह सका। गरदन को तनिक पीछे करके बोला, 'आज आपके सिवा रिक्शे में और कोई नहीं बैठा बाबू साहब।'
बाबू-साहब ने तनिक उत्सुकता से प्रश्न किया, 'क्यों रे, फिर दिन भर क्या करता रहा?'
रिक्शे वाले ने प्रच्छन्न वेदना युक्त एक हलका-सा निश्वास भरते हुए क्षीण स्वर में कहा, 'रजिया आज चार दिन से बीमार है। खुदा जाने बचेगी या नहीं?'
पन्नालाल ने कुछ आगे झुककर जल्दी से पूछा, 'रजिया! रजिया कौन?'
रिक्शे वाले ने गरदन घुमाकर कहा, 'मेरी बच्ची है।' कुछ रुक कर बोला, 'मैं तो मरद हूं, ज़्यादा चिंता नहीं करता। पर उसकी मां रो-रो कर दरिया बहाये दे रही है। औरत जात जो ठहरी। उसको रोता देख, मेरा भी दिल भर आता है।'

पन्नालाल ने कुछ हलकापन महसूस किया। रिक्शे वाले को खामोश देख कर प्रश्न किया, तेरा नाम क्या है रे?'
रिक्शे वाले ने इस बार सामने गरदन किये ही ऊंचे स्वर में कहा, 'मुझ खाकसार को नज़ीर कहते हैं।'
और उसी क्षण नज़ीर को सहसा एक भूली हुई बात याद हो आई। वह भीतर ही भीतर किसी अज्ञात आशंका से सिहर उठा। साथ ही उसने रिक्शा तेज करने के लिए और जोर लगाया। कुछ देर चलने के बाद उसने अलक्ष्य ही में धीरे-से कहा. 'आखिर खुदा सब देखता है। अब रजिया के लिए दवा ले आऊंगा। नहीं तो आठ आने के लिए उसकी जान ही चली जाती।'

नज़ीर की यह बात भले ही अलक्ष्य में क्यों न कही गयी हो, पर पन्नालाल के कानों ने सब सुना ही। उसके चेहरे पर किसी अज्ञात आनंद की रेखाएं उभर आई। चांदनी चौक की अपार भीड़ से निकल कर रिक्शा काफी खुली सड़क पर आ गया था। भीड़ भी बिखरी-बिखरी-सी थी।

नज़ीर ने अपनी रजिया और रजिया की मां के अविरल आंसुओं का स्मरण करके समूची शक्ति से जोर लगाया। उसके सांवले शरीर पर पसीने की तरलता चमक उठी। शरीर के भीतर अपरिमेय खुशी की लहर व्याप्त हो गई। अब कोई चिंता नहीं। कुछ ही समय बाद उसकी मुट्ठी में अठन्नी आयेगी। वह सीधा देवराज चोपड़ा की दुकान पर जायेगा। वहां असंख्य शीशियां कांच की अलमारियों में सजी पड़ी हैं। समस्त रोगों का उपचार। अपनी आंखों से हमेशा देखता है, पर खरीद नहीं पाता। काश! देखने भर से बीमारी दूर हो जाती! खरीदना तो उसके बस की बात नहीं। सीधा उनकी दुकान जायेगा। अठन्नी सौंप कर कहेगा, 'अब तो दवा दीजिये, दिन भर की कमाई आपके हवाले कर रहा हूं।'

रिक्शे वाले ने अपनी शक्ति के परे और जोर लगाया। वह मन की नज़र से साफ देख रहा था - रजिया मरणासन्न पड़ी है। उसकी देह पर सर झुकाये मां चुपचाप आंसू बहा रही है।

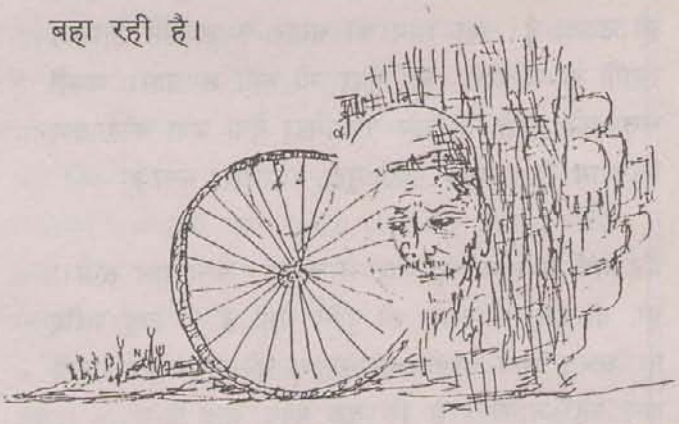

पर अब दवा देखते ही उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहेगा। रजिया ज़रूर बच जायेगी। इस बार नज़ीर ने बाबू-साहब को लक्ष्य करके कहा, 'भाई जान, इस दुनिया में अब इंसानियत रही ही नहीं। चोपड़ा साहब के सामने कितना गिड़गिड़ाया, आरज़ू मिन्नत की, पर सब बेकार। पैसा ही सब-कुछ है। इंसान के आंसुओं की कोई कद्र नहीं। उन्होंने साफ मना कर दिया कि पहले पैसे लेकर आऊं, फिर दवा की बात करूं।'

नज़ीर का गला भर आया। विगलित स्वर में कहने लगा, 'आज कल धरम-मज़हब का अजीब भूत लोगों के सर

पर सवार हो गया। इंसानियत को आग लगा दी-धरम ने, मज़हब ने। भाड़ में जाये ये सब। इंसान तो कुत्ते से भी गया-गुज़रा हो गया। क्या बताऊं .... !'
'कुछ भी बताने की ज़रूरत नहीं।' बाबू साहब ने घुड़की पिलाते हुए कहा, 'मुझे उपदेश दे रहा है। रिक्शा तो तेज़ चलता नहीं और धरम-मज़हब से कुश्ती लड़ रहा है। चल जल्दी चल।'

नज़ीर ने शक्ति के परे और अधिक जोर लगाया। उसके पास बेकार बातें करने का समय ही कहां है? पन्नालाल की घुड़की सुनते ही चुप हो गया। उसे तो रजिया की दवा के लिए आठ आने के पैसे भर चाहिए। जिसके बल पर वह मौत से जीवन का सौदा करेगा। आजकल तो जीवन भी बिकने लगा है दुकानों में। पैसा नहीं है तो मौत दबोच लेगी। इस अठन्नी में रजिया की ज़िन्दगी है - उसकी सांस, आंखें और उसकी मुस्कराहट। अब मौत की क्या बिसात कि बाप से उसकी बेटी को छीन ले? कैसा दृढ़ विश्वास है बाप का अपनी बेटी के प्रति। उसने और जोर लगाया। रही-सही ताकत भी झोंक दी।

नज़ीर को अपनी ताकत का यह एहसास नहीं था। बड़ा गुमान हुआ उसे। रिक्शा हवा से होड़ करता उड़ रहा था। अपने गर्व को व्यक्त करने की कमज़ोरी से बाधित होकर नज़ीर ने कहा, 'तमाम दिल्ली में इतना तेज़ रिक्शा कोई चला ले तो रिक्शा चलाना छोड़ दूं।'

काली-काली सड़क पर फिसलता हुआ रिक्शा साइकिल व तांगों को पीछे छोड़ता सरपट जा रहा था। जितना जल्दी हो सके वैद्यराज की दुकान पर पहुंचना है। अठन्नी देकर अपनी बिटिया का जीवन खरीदना है उसे।

इंसान का शरीर पाकर नज़ीर बिलकुल मशीन में ढल गया था। पांव, हाथ, आंखें, कान, मांस-मज्जा सभी कुछ कल के पुर्जों की तरह निर्विघ्न काम कर रहेंगे। दरियागंज के पीतवर्णा थाने के पास आते ही उसने रिक्शा धीरे करते हुए पूछा, 'भाई जान, आपको कहां उतरना है। जहां फरमायें, छोड़ दूं?'

जवाब नहीं मिलने पर उसने पीछे मुड़कर देखा और उसी क्षण मानो उसकी देह पर बिजली गिरी हो। रिक्शा खाली था। बेहोशी की हालत में पुतलियां घुमा कर देखा-भाई जान कहीं नजर नहीं आये। उसने बार-बार आंखें बंद कीं और खोलीं, पर खाली रिक्शा हर बार खाली ही नज़र आया।

पर पन्नालाल की डायरी का पृष्ठ खाली नहीं रहेगा। उसका दिन निष्फल नहीं गया। गुरुजी को छूकर की गई प्रतिज्ञा आज फिर सार्थक हुई।

विजयदान देथा

'अलेखूं हिटलर' से साभार
राजकमल प्रकाशन - 1984

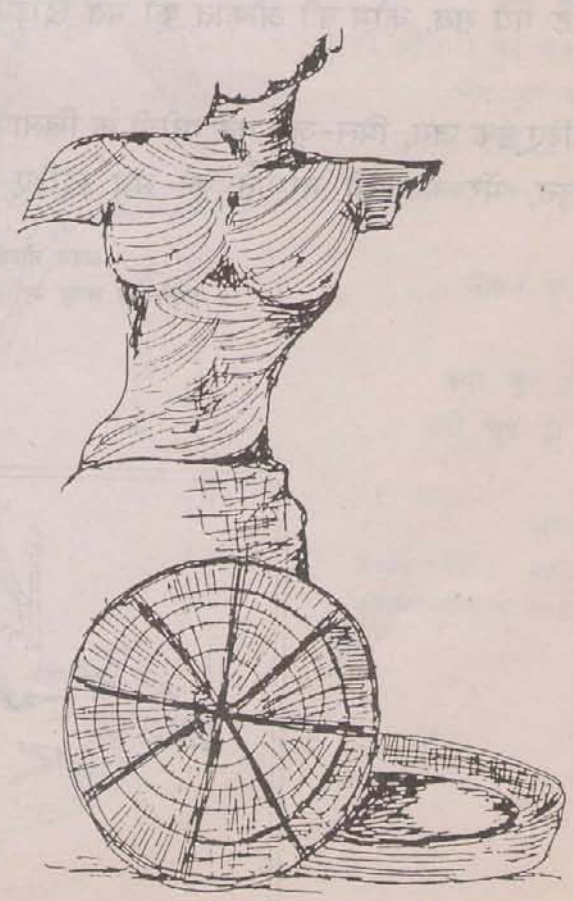

●

हिंदू या मुस्लिम के अहसासात को मत छेड़िए
अपनी कुरसी के लिए जज़्बात को मत छेड़िए

हममें कोई हूण, कोई शक, कोई मंगोल है
दफ्न है जो बात, अब उस बात को मत छेड़िए

ग़लतियां बाबर की थीं, जुम्मन का घर फिर क्यूं जले
ऐसे नाज़ुक वक़्त में हालात को मत छेड़िए

हैं कहां हिटलर, हलाकू, ज़ार या चंगेज़ ख़ां
मिट गये सब, क़ौम की औक़ात को मत छेड़िए

छेड़िए इक जंग, मिल-जुल कर ग़रीबी के ख़िलाफ़
दोस्त, मेरे मज़हबी नग़मात को मत छेड़िए

– अदम गोंडवी
'धरती की सतह पर' से

मेरठ 87

जब जब किसी स्टेशन पर रूकती है रेलगाड़ी
खिड़कियों से झरती हैं आवाज़ें
और कौंधती हैं बत्तियां
खिड़की से दूर बैठा बूढ़ा पूछता है
खिड़की के पास बैठे लड़के से
"कौन-सा टेशन है भैया ?"
खिड़की से बाहर झांकता है लड़का
पढ़ता है स्टेशन का बोर्ड
कहता है
"मेरठ।"
हर स्टेशन पर पूछता है बूढ़ा
"कौनसा टेशन है भैया ?"
हर स्टेशन पर बाहर झांकता है लड़का
पढ़ता है बोर्ड और कहता है
"मेरठ।"
मेरठ।
मेरठ।
मेरठ।
नीली बत्तियों वाली बोगी में
ठसाठस भरे लोग बुदबुदाते हैं
मेरठ से कब बाहर निकलेगी
यह रेलगाड़ी ?

राजेश जोशी

उत्तरार्द्ध अंक-30 से

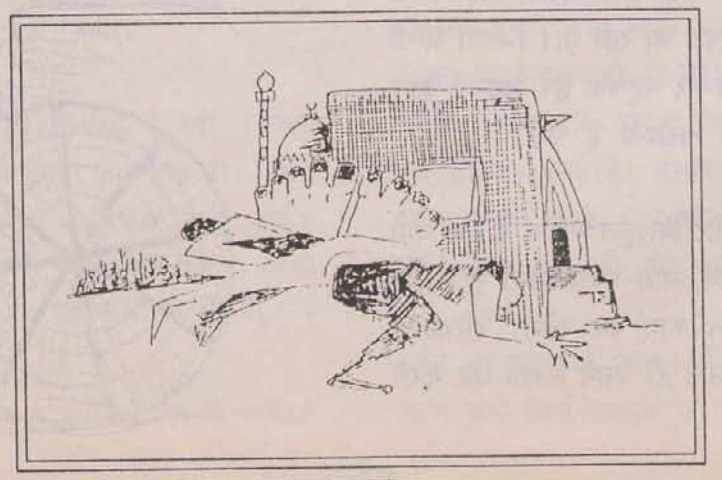

नरेन्द्र जैन की शीर्षक बगैर कविता

रोजी रोटी का
सवाल खड़ा करती है जनता
शासन कुछ देर सिर खुजलाता है
एकाएक सांप्रदायिक फसाद शुरू हो जाता है

हर हाथ के लिए काम
मांगती है जनता
शासन कुछ देर विचार करता है
एकाएक सांप्रदायिक फसाद शुरू हो जाता है

अपने
बुनियादी हकों का
हवाला देती है जनता
शासन कुछ देर झपकी लेता है
एकाएक सांप्रदायिक फसाद शुरू हो जाता है

सांप्रदायिक फसाद के शुरू होते ही
हरकत में आ जाती हैं बंदूकें
स्थिति कभी गंभीर
कभी नियंत्रण में बतलाई जाती है

एक लम्बे अर्से के लिए
स्थगित हो जाती है जनता
और उसकी मांगें

इस संपूर्ण प्रक्रिया मे शासन
अपनी चरमराती कुर्सी को
ठोंक-पीटकर पुनः ठीक
कर लेता है

नरेन्द्र जैन
(पहल-33 दिसम्बर 87)

पंजाब प्रसंग पर लिखी कविता

एक सौ छठी बार

आज मैं एक सौ छठी बार
एक छोटा-सा
बच्चा बनूंगा
चिढ़ाऊंगा सबको
जीभ मोड़-मोड़ कर
आंखें झपक-झपक कर
और जब सब हंसते रहेंगे
धीरे-धीरे उनकी तस्वीरें
बना रख लूंगा
अपने ख्यालों में
और रात को
जब सब सो जाएंगे
खोल लूंगा
अपने औज़ारों का बक्सा
चुन-चुन कर
उनकी तस्वीरों को
क्षत-विक्षत कर दूंगा

चीखते हुए-

क्यों चुप हो,
क्यों चुप हो?

लाल्टू
विपाशा वर्ष:3 अंक:6
सितम्बर-ऑक्टूबर 1987

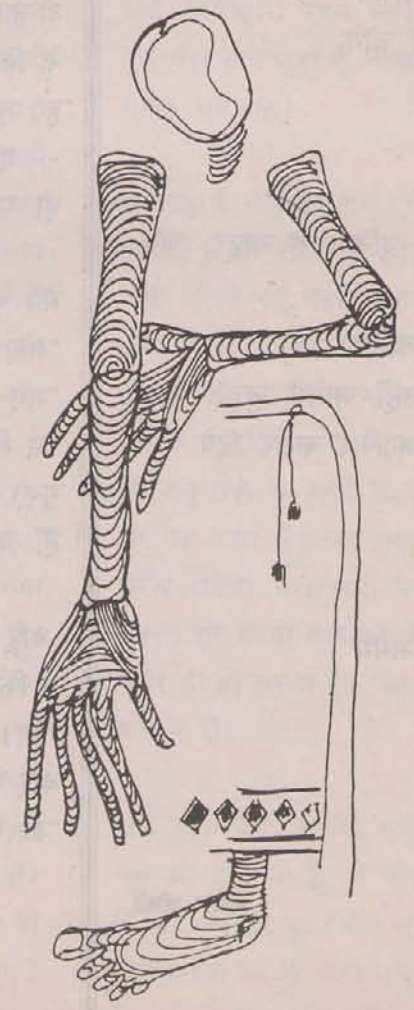

मारे जायेंगे

जो इस पागलपन में शामिल नहीं होंगे
मारे जायेंगे।

कटघरे में खड़े कर दिये जायेंगे जो विरोध में
बोलेंगे
जो सच सच बोलेंगे, मारे जायेंगे।
बर्दाश्त नहीं किया जायेगा कि किसी की कमीज़
हो
"उनकी" कमीज़ से ज़्यादा सफेद
कमीज़ पर जिनके दाग नहीं होंगे,
मारे जायेंगे।

धकेल दिये जायेंगे कला की दुनिया से बाहर, जो
चारण नहीं
जो गुन नहीं गायेंगे, मारे जायेंगे।
धर्म की ध्वजा उठाये जो नहीं जायेंगे जुलूस में
गोलियां भून डालेंगी उन्हें, काफ़िर करार दिये
जायेंगे।

सबसे बड़ा अपराध है इस समय
निहत्थे और निरपराध होना
जो अपराधी नहीं होंगे
मारे जायेंगे

राजेश जोशी

"मारो-काटो कत्ल करो"

गांधी रोड़ पर मैं दौड़ने लगा। सामने से एक जुलूस "मारो-काटो" के नारे लगाता हुआ आ रहा था। पीछे से भी एक जुलूस आ रहा था। मेरी सांस उखड़ी हुई। घबराहट में सामने से आते एक बूढ़े से मैं टकरा गया। बूढ़ा गिरते-गिरते बचा और मैंने भी उसका हाथ पकड़ लिया। "क्यों दौड़ता है?" बूढ़े ने हसते हुए मुझसे पूछा।

मुझे लगा, यह आदमी अहमदाबाद के वातावरण से वाकिफ नहीं शायद। "महाशय, आप भी दौड़िए। यहां कौमी तूफान उठ खड़ा हुआ है। -- पुलिस ने गोलीबारी भी शुरू कर दी है। भागो, वरना कोई गोली चला देगा।" कहकर दौड़ने के लिए मैंने फिर अपनी पीठ घुमायी। मेरी शर्ट पकड़ते हुए वृद्ध ने कहा, "अब मुझे कोई गोली नहीं मार सकता -- एक बार हो गया सो हो गया---अब मैं 'बुलेटप्रूफ' हो गया हूं!"

मैने वृद्ध की ओर देखा और चौंक उठा --
"अरे, गांधी बापू!"
"शस्--धीरे बोल--" कहकर बापू ने मेरे मुंह पर हाथ रख दिया। इतने में ही बगल से मिलिटरी की एक जीप गुज़र गयी। बापू ने धीरे से मुझसे पूछा, "हम जहां खड़े हैं, उस रास्ते का नाम क्या है?"

बापू, हम गांधी-मार्ग पर खड़े हैं--" मैंने कहा और वहां से फिर एक जुलूस "मारो-काटो" के नारे लगाते हुए गुज़र गया।
बापू ने जुलूस की ओर अंगुली उठाते हुए मुझसे पूछा, "तो वे लोग गांधी-मार्ग पर जा रहे हैं?"

बिनोद भट्ट
('सुना अनसुना' से)

भारत में साम्प्रदायिक तनाव

सितम्बर-अक्टूबर, 1989

क्र.	स्थान	जिला	दिनांक
आन्ध्रप्रदेश			
1.	नीला एवं 5 अन्य गांवों में	निज़ामाबाद	24 अक्टूबर
बिहार			
2.	झरिया	झरिया	17 अक्टूबर
3.	गया	गया	21 अक्टूबर
4.	तीन गांव	सीतामढ़ी	22 अक्टूबर
5.	दरभंगा	दरभंगा	23 अक्टूबर
6.	भागलपुर	भागलपुर	24 अक्टूबर
7.	राधानगर	भागलपुर	27 अक्टूबर
8.	राजपुर	भागलपुर	27 अक्टूबर
9.	पुरणी	भागलपुर	27 अक्टूबर
10.	गनौली	मुंगेर	27 अक्टूबर
11.	कजरौली	मुंगेर	27 अक्टूबर
12.	पटना	पटना	28 अक्टूबर
गुजरात			
13.	तारापुर	खेड़ा	18 सितम्बर
14.	खम्भात	खेड़ा	3 अक्टूबर
15.	पालनपुर	बनासकांठा	4 अक्टूबर
16.	वडाली	मेहसाणा	4 अक्टूबर
17.	हंसोत	भड़ौच (भरूच)	6 अक्टूबर
18.	वीजापुर	मेहसाणा	9 अक्टूबर
19.	सिद्धपुर	मेहसाणा	15 अक्टूबर
20.	पाटण	मेहसाणा	19 अक्टूबर
21.	गोधरा	पंचमहल	22 अक्टूबर
कर्नाटक			
22.	राइचुर	राइचुर	13 सितम्बर
23.	होस्पेट	बेलारी	9 अक्टूबर
मध्यप्रदेश			
24.	महू	इन्दौर	28 सितम्बर
25.	खरगोन	पश्चिम निमाड़	29 सितम्बर
26.	रतलाम	रतलाम	1 अक्टूबर
27.	उज्जैन	उज्जैन	1 अक्टूबर
28.	मंदसौर	मंदसौर	2 अक्टूबर
29.	खुजनेर	राजगढ़	2 अक्टूबर
30.	सेंधवा	पश्चिमी निमाड़	2 अक्टूबर
31.	सागर	सागर	2 अक्टूबर
32.	मोहन बड़ोदिया	शाजापुर	4 अक्टूबर
33.	विदिशा	विदिशा	4 अक्टूबर
34.	महिदपुर	उज्जैन	4 अक्टूबर
35.	इन्दौर	इन्दौर	14 अक्टूबर
36.	नागदा	उज्जैन	16 अक्टूबर
37.	बलघाट	देवास	16 अक्टूबर
38.	पलनागर	देवास	16 अक्टूबर
39.	महू	इन्दौर	19 अक्टूबर
40.	धार	धार	19 अक्टूबर
41.	झाबुआ	झाबुआ	22 अक्टूबर
महाराष्ट्र			
42.	बम्बई	बम्बई	10 अक्टूबर
43.	नागपुर	नागपुर	13 अक्टूबर
राजस्थान			
44.	कोटा	कोटा	13 सितम्बर
45.	जयपुर	जयपुर	5 अक्टूबर
46.	देवली	कोटा	8 अक्टूबर
47.	सरोली	झालावाड़	10 अक्टूबर
48.	ब्यावर	अजमेर	10 अक्टूबर
49.	जहाजपुर	भीलवाड़ा	10 अक्टूबर
50.	छीपा बरोड़	कोटा	10 अक्टूबर
51.	बाड़ा	कोटा	10 अक्टूबर
52.	मंडाना	कोटा	10 अक्टूबर
53.	खानपुर	झालावाड़	2 अक्टूबर
54.	लाडनूं	नागौर	19 अक्टूबर
तमिल नाडु			
55.	कक्काडु	कन्याकुमारी	6 अक्टूबर
उत्तरप्रदेश			
56.	बदायूं	बदायूं	28 सितंबर

चुनाव और साम्प्रदायिक दंगे

	वर्ष	घटनाएं	मारे गए लोग
	1960-63	343	181
चुनाव वर्ष	**1963-64**	**1125**	**1733**
	1965-67	326	92
चुनाव वर्ष	**1967-68**	**484**	**290**
	1968-71	1090	869
चुनाव वर्ष	**1971-72**	**512**	**600**
	1972-76	864	उपलब्ध नहीं
चुनाव वर्ष	**1976-77**	**30**	**11**
	1977-79	490	207
चुनाव वर्ष	**1979-80**	**229**	**272**
	1980-83	1597	936
चुनाव वर्ष	**1984**	**600**	**3500**
	1985-88	2400	1600

*संकलन - पीपुल्स यूनियन फार डेमोक्रटिक राइट्स, दिल्ली

चुनाव की ओर

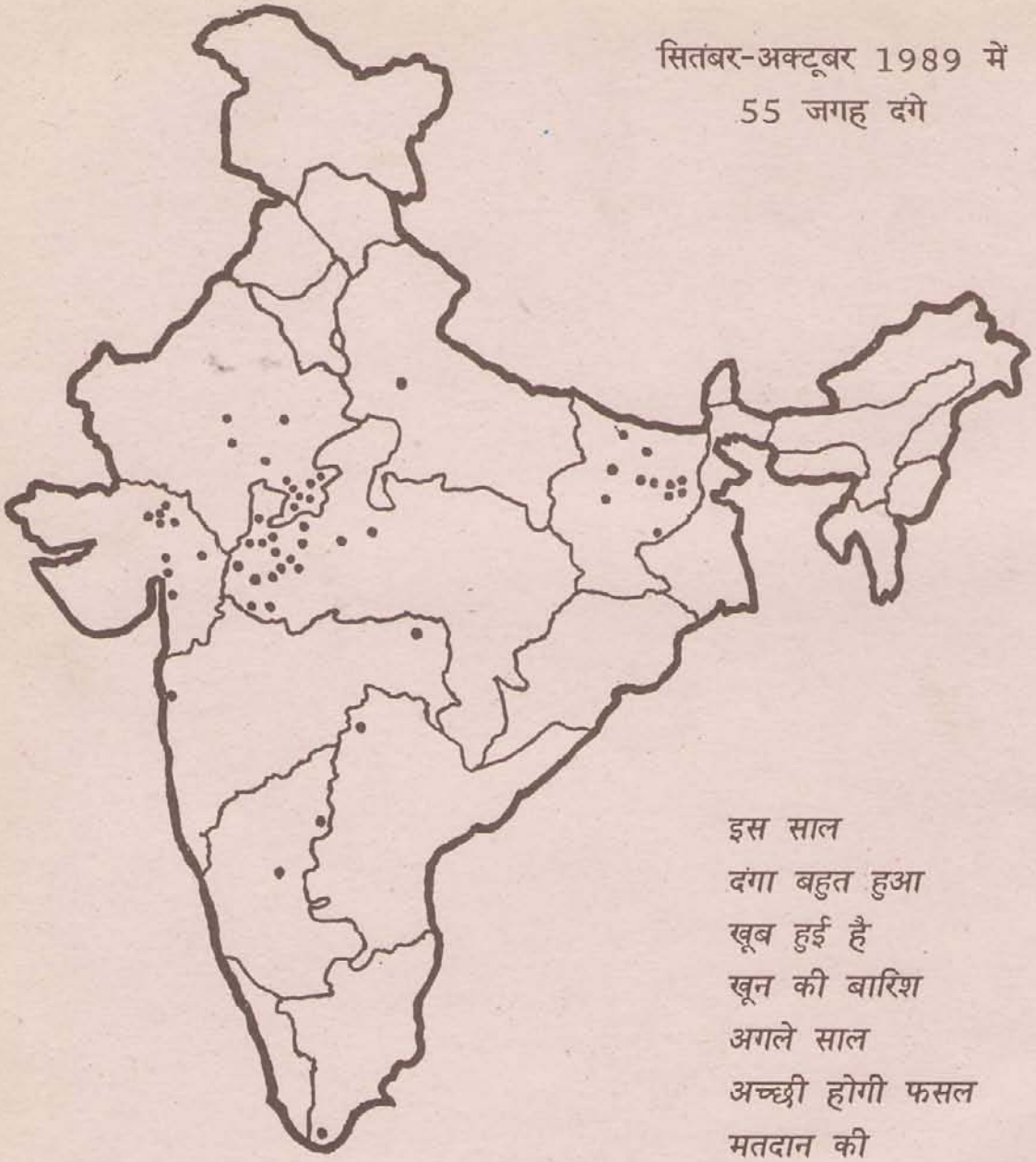

सितंबर-अक्टूबर 1989 में
55 जगह दंगे

इस साल
दंगा बहुत हुआ
खूब हुई है
खून की बारिश
अगले साल
अच्छी होगी फसल
मतदान की

गोरख पांडेय

प्रकाशक : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016
संपादन कार्यालय : एकलव्य, कोठी बाज़ार, होशंगाबाद 461 001
मुद्रण :भंडारी ऑफसेट, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016